ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 11 जून 2017 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 11 जून 2017 से 17 जून 2017

आषाढ़ कृ. – 02 ● वि० सं०–2074 ● वर्ष 58, अंक 75, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. ने सोलन में मनाया 131 वाँ स्थापना दिवस

प्रधान डॉ. पूनम सूरी (पद्म श्री से अलंकृत) ने नई पहचान बनाने का किया आह्वान

एम.आर. ए.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सोलन में दिनांक 1 जून 2017 को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हिमाचल प्रदेश के तत्वाधान में डी.ए.वी. स्थापना दिवस का आयोजन बड़े धूम धाम से किया गया। आयोजन आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हिमाचल प्रदेश की प्रधान श्रीमती जे. काकड़िया के मार्ग दर्शन में किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. प्रबन्धकृत्री समिति, नई दिल्ली के द्वारा की गई। इस कार्यक्रम में डी.ए.वी. प्रबंधक समिति के अनेक पदाधिकारी व अधिकारी तथा अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे, जिनमें श्री एम.एल. सेकरी, श्री राजेन्द्र नाथ, आचार्य चैतन्यमुनि, माता सत्याप्रियायति, महात्मा करूणानंद जी, श्री एस.के, शर्मा, श्री सत्यपाल आर्य, ब्रिगेडियर ए.के. अदलक्खा, श्री आर.सी. जीवन, रीजनल डायरेक्टर, चैयरमैन व अनेक राज्यों राजस्थान, पंजाब, हरियाण, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश आदि से आए प्रधानाचार्य तथा लगभग 600 अध्यापक उपस्थित थे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व अनके गणमान्य अतिथियों का स्वागत हिमाचल प्रदेश के पारंपरिक लोक नृत्य नाटी व हिमाचली वाद्य यंत्रों द्वारा किया गया।

वैदिक मंत्रों के द्वारा इस कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात डॉ. पूनम सूरी व आए अनेक गणमान्य अतिथियों का फूलों द्वारा अभिनंदन किया गया। डॉ. पूनम सूरी जी को भारत सरकार द्वारा पद्म श्री पुरस्कार मिलने के उपलक्ष्य में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हिमाचल प्रदेश की प्रधान श्रीमती जे. काकड़िया व मंत्री श्रीमती शशि किरण और समस्त हिमाचल प्रदेश के स्कूलों द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया।

डॉ. पूनम सूरी जी ने वहाँ पर उपस्थित लोगों को संबोधित किया। उन्होंने डी.ए.वी. ब्राण्ड के बारे में विस्तार से जानकारी दी और बताया कि डी.ए.वी. संस्थाओं की अलग पहचान है। उन्होंने यह भी बताया कि डी.ए.वी. के प्रेरणा स्रोत महात्मा हंसराज, पं. लेखराम जी एवं गुरुदत्त विद्यार्थी हैं। हमें उनके आदर्शों को आगे बढ़ाना है। जिस तरह उन्होंने त्याग द्वारा इस संस्था को आगे बढ़ाया है उसी तरह हमें भी डी.ए.वी. के लिए प्रयासरत् रहना है। शिक्षकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि डी.ए.वी. का हर शिक्षक धर्म शिक्षक है इसलिए सभी शिक्षकों का कर्त्तव्य है कि वे अपने विद्यार्थियों में नैतिक गुणों का समावेश करें। उन्होंने यह भी बताया कि ईश्वर मानव को बनाता है और डी.ए.वी. उनमें मानवता भरती है। अंत में उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि विद्यार्थियों में सुदृढ़ चरित्र का निर्माण हो जिससे उसका सर्वांगीण विकास हो सके।

महात्मा चैतन्य मुनिजी ने बताया कि शिक्षा एक साधना है इसलिए डी.ए.वी. के सभी शिक्षकों का यह कर्तव्य है कि वे अपनी साधना द्वारा बच्चों में नैतिक गुणों का समावेश करें ताकि विद्यार्थी अपने जीवन में सफल हो सके।

श्री आर.सी. जीवन जी ने कहा कि हमें ईश्वर से यही प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे जो भी दुर्गण हैं उसे दूर करें व हम अच्छाइयों की राह पर आगे बढ़ें ताकि हम अपने जीवन को सफल बना सके।

इस विशेष अवसर पर डी.ए.वी. सैक्टर–8, चण्डीगढ़ की छात्रा भूमि सांवत को जिसने 99.4 प्रतिशत अंकों के साथ बारहवीं कक्षा में द्वितीय स्थान तथा विज्ञान ग्रुप में देश में प्रथम स्थान प्राप्त करके पूरे देश को गौरवान्वित किया। आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी द्वारा 'प्राइड ऑफ डी.ए.वी.' का प्रमाण पत्र तथा 51,000 का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

डी.ए.वी. स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अनेक रंगारंग प्रस्तुतियाँ दी गईं। विद्यार्थियों द्वारा वैदिक मंत्रों का हिंदी व अंग्रेजी में अनुवाद प्रस्तुत किया गया। शास्त्रीय संगीत पर आधारित 'सिम्फनी व हॉरमनी' कार्यक्रम प्रस्तुत किया तथा डी.ए.वी. के 131 वर्ष पूरे होने पर एक समूह गान प्रस्तुत किया गया व एक मनमोहक हिमाचली नाटी प्रस्तुत की गई।

अंत में श्रीमती पी. सोफत, रीजनल डायरेक्टर, हिमाचल प्रदेश जोन–1 ने समस्त आए अतिथियों का धन्यवाद किया और यह आश्वासन दिया कि प्रधान जी द्वारा दिए गए निर्देशों का हम पूरी तरह पालन करेंगे और उनके आदर्शों को आगे बढ़ाएँगे तत्पश्चात कार्यक्रमा का समापन शांति पाठ से किया गया।

इस कार्यक्रम के आयोजन में श्रीमती अनुपमा शर्मा तथा डी.ए.वी. सोलन के अध्यापकों/अध्यापिकाओं तथा कर्मचारियों का विशेष योगदान रहा जिसकी सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह – रविवार, 11 जून 2017 से 17 जून 2017

जो अन्धे-लंगड़े को तारता है

●डॉ. रामनाथ वेदालंकार

अयं विप्राय दाशुषे, वाजाँ इयर्ति गोमतः।
अयं सप्तभ्य आ वरं वि वो मदे,
प्रान्धं श्रोणं च तारिषद् विवक्षसे।।

ऋग् १०.२५.११

ऋषिः **ऐन्द्रो विमदः, प्राजापत्यो वा, वासुको वसुकृद् वा** । देवता **सोमः** । छन्दः **आस्तारपंक्तिः** ।

● **(अयं)** यह [सोम प्रभु], **(दाशुषे)** विद्यादान करनेवाले, **(विप्राय)** ज्ञानी ब्राह्मण के लिए, **(गोमतः)** गौओं से युक्त, **(वाजान्)** अन्न, धन, बल आदि, **(इयर्ति)** प्रेरित करता है, प्रदान करता है, **(अयं)** यह, **(सप्तभ्यः)** [पांच ज्ञानेन्द्रियाँ और मन–बुद्धि इन] सात ऋषियों के लिए, **(वरं)** वर, **(आ[इयर्ति])** प्रदान करता है [और], **(वः)** अपने, **(वि मदे)** विशेष मद में [आकर] **(अन्धं)** अन्धे को, **(श्रोणं च)** और लंगड़े को, **(प्र तारिषत्)** प्रकृष्ट रूप से तार देता है। [हे सोम !] तू, **(विवक्षसे)** महान् है।

● आओ, मित्रो! 'सोम' प्रभु की महिमा सुनो। सोम प्रभु जिसपर प्रसन्न हो जाता है, उसका कल्याण कर देता है। प्रसन्न वह उन्हीं पर होता है जो वर्णाश्रम–मर्यादा के अनुसार अपने कर्तव्य–पालन में संलग्न रहते हैं। वह विद्यदान करनेवाले ज्ञानी ब्राह्मण को धेनु, अन्न, धन, बल आदि प्रदान करता है। देखो, इन तपःपूत ज्ञानी ब्राह्मणों के अन्दर दिव्य गौएँ, अन्तःप्रकाश की दिव्य किरणें स्फुरित हो रही हैं, उसके अन्दर अदम्य आत्म–बल हिलोरें ले रहा है, बिना मांगे ही इन्हें गो–दुग्ध, अन्न, धन आदि अभीष्ट पदार्थ प्राप्त हो रहे हैं। यह सब इन्हें इनके विद्यादान के प्रतिफल में सोम प्रभु ने दिया है। इसी प्रकार वह स्व–स्व–कर्तव्य–निरत क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को उन–उनके योग्य ऐश्वर्य से सम्मानित कर कृतार्थ करता है। इसके अतिरिक्त सप्त–ऋषियों को वह वर प्रदान करता है। शरीर के अन्दर जो पंच–ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि ये सात ज्ञान के साधन निहित हैं ये ही सप्त–ऋषि हैं, इन्हें वह अभीष्ट वर–प्रदान से निहाल कर देता है। नेत्रों को दिव्य दृष्टि–शक्ति, श्रोत्रों को दिव्य श्रवण–शक्ति, रसना को दिव्य स्वादन–शक्ति, नासिका को दिव्य घ्राण–शक्ति, त्वचा को दिव्य स्पर्श–शक्ति, मन को दिव्य संकल्प–शक्ति, बुद्धि को दिव्य अध्यवसाय–शक्ति देकर कृतकृत्य कर देता है।

और भी उस सोम–प्रभु की लीला देखो। वह अन्धे और लंगड़े को भी तार देता है। अन्धे को आँखें देनेवाला, नेत्रहीन की प्रज्ञा–चक्षु देनेवाला, अज्ञानियों को ज्ञान–चक्षु देने वाला, अविवेकियों को विवेक की आँख देनेवाला वही है। वही लंगड़े को पैर प्रदान करता है, साधनहीन के भी समीप लक्ष्य–सिद्धि के साधन जुटा देता है। उसकी कृपा होने पर अन्धा चक्षुष्मान् से अधिक और विकल चरणवाला अविकल चरणवाले से अधिक सफलता प्राप्त कर सकता है – **जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधरे को सब कछु दरसाई।** हे सोम! तुम महान् हो, सचमुच महान् हो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

आनन्द गायत्री कथा

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में चर्चा हो रही थी कि गायत्री से वह बुद्धि मिलती है, जिसे –**'प्रज्ञा'**– कहते हैं। जो **'ऋतं'**–भरा है। **'प्रज्ञा'** और **'ऋतं–भरा'** है। **'प्रज्ञा'** और **''ऋतम्भरा''** शब्द कठिन प्रतीत होंगे। बुद्धि वह ज्ञान है जो सच्चाई के वास्तविक रूप का रहस्य प्रतीत होगा। गायत्री के तीन भागों में तीनों लोकों, तीनों वेदों और प्रत्येक प्रकार के जीवन में जो कुछ भी है उसे गायत्री का उपासक प्राप्त कर लेता है।

जब कोई गायत्री की उपासना करना चाहता है, उन वस्तुओं को प्राप्त करना चाहता है जो निश्चित रूप से गायत्री माँ प्रदान करती है, तो उसके हृदय में सबसे पहले एक प्रबल इच्छा होनी चाहिए। प्रबल इच्छा गायत्री की उपासना में सफलता पाने के लिए सबसे पहली आवश्यक वस्तु है।

–अब आगे

दूसरी आवश्यक वस्तु यह है कि जिस स्थान पर बैठकर जाप किया जाए वह अच्छा हो। कैसा स्थान अच्छा होता है– इसके विषय में महर्षि दयानन्द के ये वचन सुनिए! 'सत्यार्थ प्रकाश' में कहते हैं–

"जब उपासना करना चाहें, तब एकान्त शुद्ध प्रदेश में जाकर आसन लगाकर प्राणायाम कर, बाहर की बातों से इन्द्रियों को रोक, मन को नाभि में, चित्त में, कण्ठ में, आँखों में, शिखा में या पीठ की बीच की हड्डी में किसी स्थान पर टिकाकर आत्मा और परमात्मा को समझाकर मग्न हो जाने से अपने–आप को वश में करें।" एकान्त शुद्ध देश का अभिप्राय है कि आपके घर का ऐसा भाग जहाँ कोलाहल नहीं होता है; जहाँ आत्म–चिन्तन तथा प्रभु के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता; या फिर कोई जंगल जो शुद्ध तथा पवित्र है जहाँ निर्मल जल बहता हो; जहाँ किसी प्रकार का कोलाहल न हो; जो नगर और जनता की भीड़ से परे हो; ऐसे स्थान पर जाप करने से और गायत्री के अर्थ को समझकर कार्य करने से गायत्री की उपासना सफल होती है। एक बात याद रखिए कि गायत्री का जाप मन में करना चाहिए; केवल होठों और वाणी से नहीं। यदि आरंभ में मन के अन्दर मन्त्र न बोला जाए तो होठों से बोलने में हानि नहीं, किन्तु होठों से शब्द नहीं निकलना चाहिए। इस प्रकार बोलना चाहिए कि सर्वथा समीप बैठा हुआ मनुष्य भी उसे न सुन सके। इस प्रकार जाप का फल क्या होता है, इसका उत्तर देते हुए महर्षि लिखते हैं–

"जब इन साधनों को करता है, तब उसका आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। प्रतिदिन अपने ज्ञान और विज्ञान को बढ़ाकर वह मुक्ति तक पहुँच जाता है। जो आठ पहर में एक घड़ी भी इस प्रकार ध्यान करता है वह सदा ही उन्नति को प्राप्त होता है।"

आगे चलकर वे फिर कहते हैं–

"जैसे शीत में ठिठुरा हुआ मनुष्य आग के पास जाने से बच जाता है, जैसे इसके लिए सर्दी नहीं रहती, वैसे ही ईश्वर के समीप जाने से सब मल और दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार जीवात्मा के गुण और कर्म पवित्र हो जाते हैं।

इसलिए परमेश्वर की प्रार्थना और उपासना अवश्य ही करनी चाहिए। इससे आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पहाड़–जैसा दुःख आने पर भी घबराएगा नहीं। सबको सहन कर सकेगा।'

ऋषि के इन ऊपर के शब्दों में कितना सार है, कितनी सच्चाई है– यह तो साधना और उपासना करने वाला ही कोई व्यक्ति जान सकता है। धन्य हो दयानन्द! कितने अनुभव की बात कह दी तुमने! और सुनो मेरे भाई! ऋषि को यह अनुभव एक दिन में नहीं मिला था, अठ्ठाईस वर्ष तक घोर तप तपा उन्होंने गंगोत्री की कन्दरा में, नर्मदा के तट पर, पहाड़ों की कन्दराओं में। कितने ही स्थानों पर बैठकर वे तप करते रहे। तब जाकर उन्होंने इन बातों को लिखा। एक और स्थान पर वे कहते हैं–

"वहाँ उत्तर काशी आदि स्थान ध्यानियों के लिए अच्छे हैं किन्तु व्यापारियों के लिए वहाँ पर वाणिज्य है।"

और मैंने भारतवर्ष में घूमकर देखा कि ऋषि की बात सोलह आने सच है। उत्तर काशी और गंगोत्री में सत्य ही ध्यान में सहायता मिलती है। परन्तु जो वाणिज्य करना चाहते हैं वे तो वहाँ भी व्यापार ही करते हैं। कई भाई पूछते हैं कि योगी और ध्यानी गंगोत्री को क्यों पसन्द करते हैं? लो सुनो, इसका कारण भी बताए देता हूँ।

गंगोत्री में इतना सन्नाटा होता है कि कोई भी शब्द वहाँ सुनाई नहीं देता; केवल गंगा की ध्वनि ही है, इस प्रकार गूजँती हुई

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

प्रातः स्मरणीय शूरवीर महाराणा प्रताप

● डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

यदि किसी को राष्ट्रप्रेम, स्वाभिमान, स्वाधीनता, धर्म व संस्कृति की रक्षा के दर्शन करने हों तो इसके लिए सर्व प्रथम महाराणा प्रताप का ही नाम आता है। वह शौर्य, साहस, त्याग तथा देश प्रेम की प्रतिमूर्ति थे। महाराणा प्रताप देश की आन–बान व शान के लिए एक सच्चे शूरवीर योद्धा की भांति लड़े और अपने प्राणों को राष्ट्र हेतु आहुति देकर समर्पित कर दिया। वह जीवन भर बहुत बड़े शक्तिशाली के सामने डटे रहे कभी झुके नहीं वह अदम्य साहस वाले एक निर्भीक व साहसी योद्धा थे। महाराणा प्रताप का नाम सुनकर शक्तिशाली योद्धा अकबर को डर व घबराहट से पसीने छूटने लगते थे।

मुगल बादशाह अकबर ने उस समय बड़ी चालाकी से अनेक राजपूत राजाओं को अपनी ओर मिला लिया था कुछ राजाओं में आपसी फूट भी थी और छोटी–छोटी बातों पर आपस में लड़ते रहते थे। इसी का लाभ उठा अकबर ने कूटनीतिक चाल से उन्हें अपनी ओर मिला लिया। कुछ राजा अकबर से अन्त तक लड़ते रहे थे।

महाराणा उदय सिंह की मृत्यु (3 मार्च 1572) को होने के पश्चात् उनका पुत्र जगमाल जो महाराणा प्रताप से छोटा था वह गद्दी पर बैठा उदय सिंह, जगमाल की माँ जो उदय सिंह की छोटी रानी थी से बहुत प्यार करते थे। इसलिए मृत्यु से पूर्व उन्होंने जगमाल को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था जब कि महाराणा प्रताप ज्येष्ठ पुत्र थे उस समय नियम भी यही था कि ज्येष्ठ पुत्र ही राज्य का उत्तराधिकारी होता था। उधर सरदार व सामन्त अच्छी प्रकार जानते थे कि जगमाल राज्य को सँभालने के योग्य नहीं है। जगमाल साहसी व निर्भीक भी नहीं था, न ही वह स्वाभिमानी था, न शूरवीर था। अतः सरदारों ने महाराणा प्रताप को सिंहासन हेतु योग्य समझा तथा इस हेतु महाराणा प्रताप सिंह को सिंहासन ग्रहण करने को दबाव बनाया, महाराणा प्रताप को सरदारों का आग्रह मानना पड़ा। जगमाल को सिंहासन छोड़ने को बाध्य होना पड़ा तथा महाराणा प्रताप सिंह का उसी समय राज्याभिषेक किया गया।

महाराणा प्रताप सिंह का जब राज्याभिषेक हुआ तब मेवाड़ अत्यन्त दयनीय स्थिति में था। न वहाँ धन था न सेना थी। राज्य चारों ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ था। राजपूताने के अधिकांश राजा अकबर के साथ थे। जगमाल जो महाराणा प्रताप का भाई था वह और शक्ति सिंह दोनों अकबर से जा मिले थे। राज्य की स्थिति गंभीर थी। उधर चारों ओर शत्रुओं का जमावड़ा। ऐसे में महाराणा प्रताप ने दरबार में अपने अत्यन्त विश्वसनीय सरदारों को बुला कर सभा की। क्योंकि मेवाड़ में उनके पास न सेना थी, न धन था। न ही कोई साधन था। मुगलों के पास अपार सेना थी, धन व साधन, गोला–बारूद, तोप, हाथी–घोड़े व शस्त्र शस्त्र सब था। ऐसे में शत्रु का सामना करना तो दूर राज्य की रक्षा भी कठिन कार्य था परन्तु आवश्यकता यही थी कि राज्य की रक्षा करनी है।

महाराणा प्रताप ने सरदारों के भीतर सभा में अत्यन्त ओजस्वी वाणी द्वारा उनमें जोश भर दिया। उन्होंने कहा–'मेरे शूरवीर राजपूत भाइयो! यह हमारी मातृभूमि, पुण्यभूमि, आज भी यवनों के अधीन है। इसी मेवाड़ की रक्षा के लिए बप्पा रावल, राणा हम्मीर सिंह, राणा सांगा जैसे शूरवीर एवं प्रतापी पूर्वजों ने हँसते–हँसते मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया। वीर राजपूत माताओं ने अपनी मान मर्यादा की रक्षा हेतु धधकती ज्वाला में अपने प्राणों की आहुति दे दी। क्या आज हम आपने बाहुबल व शौर्य से मेवाड़ को पुनः स्वतन्त्र कराने में सक्षम नहीं हैं? क्या यह सत्य नहीं है कि अपने महापराक्रमी पूर्वजों का नाम सुनते ही हमारे शत्रुओं की नींद हराम हो जाती थी। उन्हीं वीरों के हम वंशज हैं। उन्हीं का खून हमारी नसों में दौड़ता है। फिर आज हमें क्या हो गया है? आज आपके सामने मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ–'जब तक चित्तौड़ को स्वतन्त्र नहीं करा लेते, मैं सोने–चाँदी की थाली में भोजन नहीं करूँगा, मुलायम गद्दों पर नहीं सोऊँगा, राजभवन में वास नहीं करूँगा। इनके स्थान पर मैं पत्तल में भोजन करूँगा, जमीन पर ही सोऊँगा, झोंपड़ी में वास करूँगा और चित्तौड़ को जब तक स्वाधीन नहीं कर लेता तब तक दाढ़ी नहीं कटवाऊँगा। शूरवीर सरदारो! मेरी यह प्रतिज्ञा पूर्ण करने में आप तन–मन–धन सभी प्रकार से मुझे सहयोग दें, सहायता करें। यही आप लोगों से निवेदन है'।

सरदारों ने भी महाराणा प्रताप के ओजस्वी वचन सुन अपने शरीर के रक्त की अन्तिम बूँद तक साथ रहने चित्तौड़ की स्वतन्त्रता के लिए शत्रु से लड़ते रहने का वचन दिया।

उस समय मेवाड़ में शीतल भाट नाम का एक कवि था। उस समय भाट व चारण देशवासियों के हृदय में देशप्रेम के क्रान्तिकारी व वीररस के गीत व कविता सुना देश भक्ति की ज्योति जगाया करते थे। सैनिकों का उत्साह वर्धन करते थे। उस समय अरावली के सुन्दर स्थान पर महाराणा प्रताप का दरबार लगा था। वहाँ मंत्री भामाशाह, चन्द्रावत सरदार, रावत सोनगिरा, झाला राव, मुन्ना सिंह आदि सामन्त व सरदार–गण विराज मान थे विचार विमर्श चल रहा था तभी वहाँ शीतल भाट ने पहुँच कर महाराणा की प्रशंसा में कविता सुनाई जिसे सुन प्रताप ने प्रसन्न हो कर अपनी पगड़ी उसे भेंट में दे दी। उसने महाराणा को हृदय से आशीर्वाद दिया।

घूमते घूमते शीतल भाट अकबर के दरबार में पहुँच गया नतमस्तक हो बादशाह को सलाम किया। जब वह सलाम कर रहा था उसे कुछ याद आया उसने अपने सिर से पगड़ी उतार कर एक हाथ में अलग ले ली तब सिर झुकाया। यह देख अकबर के दरबारी जन स्तब्ध रह गए। शीतल ने ऐसा क्यों किया तब शीतल भाट ने कहा पहले सकपकाया फिर काँपता हुआ बड़े गर्व व जोश से बोला गरीब परवर मैंने यह पगड़ी इसलिए उतारी कि यह पगड़ी उस महापुरुष की है जो सम्पूर्ण भारत में देशभक्ति वंश गौरव व आत्म सम्मान के लिए पूजनीय समझा जाता है। उसने आज तक किसी राजा, बादशाह के आगे सिर नहीं झुकाया अतः यह पगड़ी उसी की है और पगड़ी पहन सिर झुकाने में उसका अपमान होता, जिसके पाप का भागी मैं भी होता पहले मुझे इसका स्मरण न रहा अन्यथा मैं इस पगड़ी को पहन दरबार में कभी न आता।

शीतल भाट की बातें सुन दरबार मैं बैठे सभी आश्चर्य चकित रह गए।

एक बार अकबर के सेनापति राजा मान सिंह शोलापुर दक्खिन को विजय कर आगरा वापिस जा रहे थे तो उन्हें अकबर का एक आदेश याद आ गया कि रास्ते में महाराणा प्रताप से भी मिलते चलें। प्रताप के मन की बात जान लें इसकी अनुमति प्राप्त कर उदय पुर की झील पर मान सिंह का स्वागत किया गया सम्मान से महल में लाया गया। उनके लिये झील के किनारे भोज की व्यवस्था की गई। भोज के समय राणा प्रताप की वहाँ अनुपस्थित देख मान सिंह ने कारण पूछा। इस कार्य हेतु अमर सिंह को नियुक्त किया गया था। प्रश्न का उत्तर देते हुए अमर सिंह ने कहा कि–"महाराज महाराणा के सिर में दर्द है अतः यहाँ सम्मिलित होने में असमर्थ हैं। उन्होंने इस हेतु आपसे क्षमा माँगी है और रुखी सूखी शाक भाजी ग्रहण करने का अनुग्रह किया है"

इस बात का समर्थन प्रधान मंत्री ने भी किया परन्तु काफी अनुग्रह करने पर मान सिंह ने कहा कि शिर की पीड़ा का बहाना तो व्यर्थ है, अतिथि स्वागत तभी है जब गृह स्वामी अतिथि के साथ बैठकर भोजन करे यदि प्रताप मेरे साथ भोजन करते तो पकवानों के स्थान पर घास फूस की रोटी भी मेरे लिए उत्तम होती। मान सिंह का संदेशा महाराणा प्रताप के पास पहुँचाया गया तब महाराणा प्रताप ने स्पष्ट कहलवाया कि मैं आपके साथ इस समय भोजन में सम्मिलित नहीं हो सकता। मैं भला उस व्यक्ति के साथ किस प्रकार भोजन कर सकता हूँ जो अपने हिन्दू धर्म से गिर कर यवनों का सम्बन्धी बन गया हो और मैं कैसे विश्वास कर लूँ कि आपने अपनी बुआ के साथ कुछ खाया पिया न होगा। जिसने तुर्कों के साथ खान–पान कर लिया उसके साथ भोजन कर मैं बापा रावल के कुल को कलंकित नहीं कर सकता।

इस बात से मान सिंह क्रोधित हो गया और घोड़े पर सवार होकर बोला 'हम जल्द ही सिर की पीड़ा की दवा लेकर आएँगे' उस समय आपको ज्ञात होगा कि मान सिंह का अपमान करना कितना भयंकर कार्य है।

इसके पश्चात् हल्दी घाटी का युद्ध हुआ हल्दी घाटी का मैदान अरावली पर्वत के एक ओर के किनारे पर है। जहाँ एक ओर छोटे से सूबे की मुट्ठी भर सेना थी। दूसरी ओर भारत के शक्तिशाली योद्धाओं सेनापति के संरक्षण में विशाल सेना थी वहाँ भीषण युद्ध हुआ हल्दी घाटी वीरों के रक्त से लथपथ हो गई। भारी नरसंहार हुआ परन्तु युद्ध में किसी को विजय श्री न मिली। महाराणा प्रताप भी रक्त निकलने से दुर्बल हो गए थे। चेतक की सहायता से

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

वेद प्रचार कैसे हो?

● राजेन्द्र जिज्ञासु

इस छोटे से प्रश्न का उत्तर सरल नहीं है। प्रथम तो वेदप्रचार से क्या तात्पर्य है? एक दूसरे किन लोगों में प्रचार करना है? **कोई ऐसी अमृतधारा नहीं जो सब रोगों और सब रोगियों पर लागू की जा सके।**

वेद प्रचार के दो अर्थ हो सकते हैं। एक तो वैदिक मान्यताओं (मन्तव्यों और अमन्तव्यों) का प्रचार करना। दूसरे वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन को प्रसारित करना। ये दोनों एक बात नहीं। बहुत से कालों में वैदिक ग्रन्थों का अच्छा अध्ययन रहा। जैसे उव्वट, महीधर, सायण आदि वैदिक ग्रंथों के अच्छे अध्येता थे। **याज्ञिकों में वैदिक पुस्तकों का अध्ययन था परन्तु वैदिक सिद्धान्तों से यह कोसों दूर थे।** इस प्रकार आर्यसमाज ने सिद्धान्तों का निरन्तर प्रचार करके बहुत सी अवैदिक मान्यताओं का निराकरण किया है, परन्तु उसी के अनुपात से वैदिक साहित्य के अध्ययन में वृद्धि नहीं हुई। बहुत से लोग आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर श्रद्धा रखते हैं परन्तु उनमें इतनी योग्यता ही नहीं कि वैदिक ग्रन्थों का अवलोकन कर सकें। आर्यसमाज के पहली पीढ़ी के नेताओं की यही अवस्था थी परन्तु उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों का इस योग्यता का प्रचार किया कि जनता में वैदिक ग्रंथों के प्रति अपूर्व श्रद्धा उत्पन्न हो गई। 1869 ई. में काशी–शास्त्रार्थ के समय वेद काशी में भी नहीं मिलते थे। महर्षि दयानन्द के आन्दोलन से भारत ही नहीं विदेशों में भी वैदिक अध्ययन की रुचि बढ़ गई। मैक्समूलर ने 'स्वामी दयानन्द' पर एक प्रमुख लेख लिखा। ऋषिवर के देहान्त के उपरान्त न केवल 'वेदों' के नए संस्करण छपे अपितु शेष–भाष्य की पूर्ति के लिए भी यत्न किया। पं. तुलसीराम स्वामी जी ने सामवेद भाष्य किया। श्री शिवशंकर काव्यतीर्थ तथा श्री आर्य मुनि जी ने छूटे हुए मण्डलों का भाष्य किया। श्री पं. क्षेमकरण दास त्रिवेदी जी ने अथर्ववेद भाष्य किया। पं. जयदेव विद्यालंकार ने चारों वेदों का सरल अनुवाद निकाला। अभी वर्तमान काल से श्री महात्मा देवीचन्द ने यजुर्वेद, सामवेद[1] (1. प्रिंसिपल देवीलाल जी ने संपादक की विनती स्वीकार करके अपने सामवेद भाष्य का प्राक्कथन पूज्य उपाध्याय जी से ही लिखवाया था। **'जिज्ञासु'**) के अंग्रेजी में अनुवाद किए। श्री सातवलेकर जी, श्री विदेह जी अन्य कई विद्वानों ने अपने–अपने ढंग पर वेदों को जनता में अधिक प्रिय बनाने के अनेक प्रयास किए हैं। कई पत्र–पत्रिकाएँ जैसे वेद प्रकाश, वेदवाणी कुछ न कुछ प्रयत्न करते ही रहते हैं। फिर भी यह कहना असत्य न होगा कि स्वामी दयानन्द के आरम्भिक कार्य के पश्चात् आर्यसमाज की ओर से संगठित रूप से वैदिक ग्रन्थों के प्रचार में कोई प्रशंसनीय कार्य नहीं हुआ।

इसका दोष किसको दिया जाए? 'आर्यसमाज जागरूक नहीं' ऐसा कहना कठिन होगा। हम निरन्तर किसी न किसी रूप से कार्य करते रहे हैं और हमारी सेवाओं का देश ने, जाति ने, जनता ने मान किया है। हम सामाजिक और नैतिक अवस्था में अपूर्व परिवर्तन कर सके हैं परन्तु वैदिक ग्रन्थों की कुछ आन्तरिक क्लिष्टताएं इस प्रकार की हैं कि उन पर विजय पाना कठिन हो रहा है। प्रश्न यह है कि वर्तमान परिस्थिति में क्या किया जाए? **गत वर्षों में वैदिक मान्यताओं के प्रचार ने ही वेदों के लिए श्रद्धा उत्पन्न की है और वही नुस्खा भविष्य में भी कारगर होगा।** हमारे भजनीक यद्यपि वेद–कथा नहीं कहते फिर भी जनता में यह तो विश्वास हो ही जाता है कि सब बुराइयाँ वैदिक अध्ययन से दूर हो सकती है। इसलिए वैदिक मन्तव्यों के प्रचार के सब छोटे से छोटे उपकरणों को प्रयोग में लाना चाहिए। **जिस जनता में बस्तीराम पहुँच सकते थे उसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी के लिए प्रवेश करना कठिन था।** मैंन एक छोटी सी बात अनुभव के आधार पर लिखी हैं। **कई वर्ष हुए एक आर्य सज्जन आए और कहने लगे कि मैंने वेद पढ़ना बन्द कर दिया है। "क्यों?" "इसलिए कि अमुक पण्डित जी ने लिखा है कि बिना स्वर के वेद पढ़ना पाप है और मैं स्वर नहीं जानता।"** मैंने उसको समझाया कि बच्चे तो तुतलाकर ही बोलते हैं। वे पापी नहीं हैं। यह स्वर का नियम तो विवेकी पण्डितों के लिए ही है। 'पात्र और कुपात्र' का सिद्धान्त तो ठीक है परन्तु इसका अविद्यावश दुरुपयोग बहुत हुआ है।

उच्च श्रेणी के वेदों को पढ़ने और पढ़ाने वाले तो स्वयं यथोचित मार्ग खोज सकते हैं। उनके लिए मेरे परामर्श की अपेक्षा नहीं है, परन्तु उनको ध्यान रखना चाहिए कि वे उन प्रवृत्तियों का मनौवैज्ञानिक रूप से अध्ययन करें, जिनके कारण लोग वेदों की ओर आकर्षित नहीं होते। **'वितर्कबाधने प्रतिपक्षभावनम्'।**[1] (1. योग 2/33) यहाँ भी उपयोगी होगा। प्रश्न यह नहीं है कि हमारा कथन ठीक है या नहीं। प्रश्न यह है कि विपक्षी के मस्तिष्क में कौन सी विचारधारा बह रही है जिसके कारण वह हमारी बात नहीं मानता। **वेदों के पक्ष में बहुत सी पुस्तकें लिखी गई।** जो बात केवल वेदों के विशेषज्ञ पाठक ही निर्धारित कर सकते हैं, उसका इस लेख में संकेत करना निरर्थक है। सर्वसाधारण के लिए एक छोटी सी पुस्तक होनी चाहिए जो सरल वेदमन्त्रों का संग्रह हो और पढ़ना इस युग में तो बहुत कठिन है।

फिर भी जनता में यह श्रद्धा उत्पन्न करनी चाहिए कि प्रत्येक आर्य को वेद का पाठ मात्र तो प्रतिदिन करना चाहिए। इस विषय में मुसलमान लोगों का प्रयास अनुकरणीय है। साधारण मुसलमान न अरबी भाषा जानता है, न इस्लाम के सिद्धान्तों को समझता है, परन्तु फिर भी कुरान पढ़ता अवश्य है। हर घर में कुरान मिलेगी। और हर पढ़ा लिखा मुसलमान कुरान का नित्य पाठ करता मिलेगा। यह है तो अन्धविश्वास परन्तु 'साधारण विश्वास' के लिए सोपान या सीढ़ी तो है ही। यह ठीक है कि बिना अर्थ समझे वेद पढ़ना 'अधेन्वा' (बिना दूध की गौ) या 'अफलां, अपुष्पां' (बिना फल–फूल वाली) वाटिका के सदृश है परन्तु साथ ही यह भी ठीक है कि **स्वर–प्रक्रिया का अध्ययन या महाभाष्य के अवलोकन का उत्साह दिलाना तो ठीक है परन्तु ऐसा डरा देना ठीक नहीं कि लोग दूर भागने लगें।** 'इन्द्र–शत्रु' का दृष्टान्त महाभाष्यकार ने वैयाकरणों के लिए दिया है, साधारण जनता के लिए नहीं। **'प्रोत्साहन' लक्ष्य है 'हतोत्साहन नहीं।**

गंगा ज्ञान सागर से साभार

☞ *पृष्ठ 03 का शेष*

प्रातः स्मरणीय शूरवीर...

उनकी तलवार बिजली की भाँति शत्रुओं के सिर उड़ा रही थी। चेतक ने सलीम के हाथी के मस्तक पर पैर टिका दिए। प्रताप अत्यन्त फुर्ती से शत्रुओं को मौत के घाट उतार रहे थे। जब वह शत्रुओं से घिर गए तो झालाराव ने आगे बढ़कर प्रताप की पगड़ी पहनी व शत्रुओं पर टूट पड़े शत्रुओं ने झालाराव को ही प्रताप समझ लिया और झालाराव के पीछे मुगल शत्रु लग गए। अन्त में अनेक शत्रुओं को उड़ा कर झालाराव ने अपने आप को बलिदान कर दिया और मेवाड़ केसरी प्रताप की रक्षा की।

अन्त में शक्ति सिंह भी प्रताप से जा मिले युद्ध में जीते फसरूर किले की कुँजी शक्ति सिंह ने प्रताप के आगे रख दी परन्तु प्रताप ने फसरूर किला शक्ति सिंह को ही सौंप दिया। इस युद्ध में प्रताप का साथ भीलों ने दिया था। भीलों को प्रताप ने हृदय से लगा लिया।

महाराणा प्रताप अतुल शौर्य साहस व देशभक्ति, तेज, ओज वाले योद्धा थे। भारत शिरोमणि थे वह राष्ट्र के गौरव थे। उनके स्वाभिमान की शिक्षा आज भी धारणीय है। वह ऐसे क्रान्तिवीर थे जिसने शत्रु के सामने कभी झुकना नहीं सीखा। निर्भय रहकर मातृभूमि के लिए मर मिटना सीखा।

महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई सन् 1540 को हुआ था। वह बाल्यावस्था से ही राष्ट्र भक्ति से प्रेरित थे। उनकी माता जयवन्ताबाई ने उनके अन्दर देश के लिए मर मिटने व लड़ने की शक्ति बचपन में ही भर दी थी। यही पराक्रमी साहसी बालक जब तक जीया निर्भय होकर स्वाभिमान से जीया और राष्ट्र हेतु बलिदान हो गया। महाराणा प्रताप की 19 जनवरी 1517 को स्वास्थ्य बिगड़ने पर मृत्यु हो गई। भारत माता के सपूत को स्वाभिमान व स्वाधीनता तथा राष्ट्र की रक्षा हेतु सदैव याद किया जाता रहेगा। प्रातः स्मरणीय शूरवीर भारत के पुत्र महाराणा प्रताप के सुपुत्र अमर सिंह ने प्रताप के बाद भारत में दूर–दूर तक विजय यात्राएँ कीं।

चन्द्रलोक कालोनी,
खुर्जा, बुलन्दशहर
उत्तर प्रदेश

गर्भाशय में आत्मा का प्रवेश

● डॉ. रघुवीर वेदालंकार

21 मई के आर्य जगत् में पंचकूला के श्री कृष्ण चन्द्र जी गर्ग का प्रश्न छपा कि गर्भाशय में आत्मा का प्रवेश कब होता है? उन्होंने इस सम्बन्ध में कई घटनाएँ भी दी हैं। मैं ऐसी घटनाओं को प्रतिवाद तो नहीं कर रहा, किन्तु इन पर कुछ प्रश्न अवश्य उभरते हैं। यथा–

(1) इस प्रकार अनेक अन्य घटनाएँ भी पढ़ी–सुनी। सब में एक बात समान थी कि पूर्वजन्म के किसी स्त्री या पुरुष ने पुनः इस संसार में जन्म ले लिया। प्रश्न है कि मानव जन्म को बहुत सत्कर्मों का परिणाम माना जाता है, किन्तु ये सभी जन्म लेने वाले पूर्वजन्म में साधारण मानव ही थे। तो क्या पुरुष जन्म मिलना इतना ही आसान है?

(2) किसी ने भी यह नहीं कहा कि मैं पूर्व जन्म में अमुक पशु या पक्षी था। क्या पशु सर्वदा पशु ही रहते हैं।

(3) भारत में जितनी भी ऐसी घटनाएँ सुनी गईं, उनमें जन्म लेने वाले पूर्वजन्म में भी भारत में ही जन्मे थे तो क्या मृत्यु के उपरान्त अन्य देश का जीव अन्य देश में नहीं जाता?

(4) पूर्वजन्म की स्मृति रखने वाले सभी साधारण व्यक्ति ही थे। किसी योगी, सिद्ध को पूर्वजन्म की स्मृति क्यों नहीं होती? उनकी बुद्धि तो अति निर्मल होती है। मुझे इन घटनाओं के पक्ष–विपक्ष में कुछ नहीं कहना। गर्ग जी का मूल प्रश्न है कि आत्मा गर्भाशय में कब आता है? दो मत हैं।

(i) पुरुष के वीर्य में अनेक शुक्राणु होते हैं। उनमें से कोई एक वृद्धि प्राप्त करके भ्रूण बनकर शिशु के रूप में बदल जाता है। यह पक्ष आधुनिक सांइस का है, जो सर्वमान्य नहीं है। प्रश्न है कि इस प्रकार वो प्रत्येक व्यक्ति अपने वीर्य में करोडों देहाभिमानी जीवों को लादे फिर रहा है। ऐसा नहीं है अपितु तथ्य यह है कि वे शुक्राणु उसी प्रकार हैं यथा–दूध के दही बनने पर दही में इसी प्रकार के सूक्ष्म कीटाणु होते हैं। अतः यह धारणा उचित प्रतीत नहीं होती कि मनुष्य के उन्हीं शुक्राणुओं में से कोई एक जीवित रहकर शिशु बन जाता है।

(ii) दूसरी मान्यता यह है कि गर्भ में कई मास तक भ्रूण जीव या आत्मा रहित ही रहता है। उस अवस्था में उसमें जीवन तो रहता है किन्तु जीव नहीं। माता के शरीर से जुडा होने के कारण वह भ्रूण वृद्धि भी करता है तथा क्रमशः शनैः शनैः उसके अंग विकसित होते हैं। उस भ्रूण में सप्तम मास में जीव प्रवेश करता है। यही कारण है कि सप्तम मास से पूर्व का गर्भ गिरने पर मांस पिण्ड ही होता है, जीव सहित नहीं। अष्टम मास में भी बच्चे का जन्म निरापद नहीं माना जाता क्योंकि कुछ दिन पूर्व ही उसमें जीव का प्रवेश हुआ है।

निरुक्तकार आचार्य यास्क ने भ्रूण के विकास की जो प्रक्रिया दी है वह इस प्रकार है–एक रात्री में तो रज तथा वीर्य का मिश्रण सा (कलत) ही रहता है। पाँच रातों में बुद्बुद् अर्थात् बुलबुला सा बनाता है। सात रातों में पेथी बनता है। 14 रात्रियों में अर्बुद=पिण्ड सा बनता है। 25 रात्रियों में हड्डियों वाला होता है। एक मास में वह पिण्ड कुछ कठोर बन जाता है। दो मास में सिर बनता है। तीन मास में गर्दन बनती है। चार मास में त्वचा। पंचम मास में नाखून, रोम आदि। छठे मास में मुख, नासिका, नेत्र, कान आदि बनते हैं। सप्तम मास में घूमने में समर्थ होता है। अष्टम मास में बुद्धि से सोचता है। नवम मास में सम्पूर्ण अंगों वाला बन जाता है। गर्भोपनिषद् में भी लगभग यही प्रक्रिया है। कहीं–कहीं स्वल्प सा शब्द भेद है। यथा–उपनिषद् में स्पष्ट रूप में लिखा है–

सप्तमे मासे जीवने संयुक्तो भवति।

अर्थात् वह भ्रूण सप्तम मास में जीव=आत्मा से सयुंक्त होता है। यही है गर्ग जी के प्रश्न का उत्तर। प्रश्न है कि जीव के संयोग से पूर्व भ्रूण का विकास कैसे होता है? उत्तर है कि माता से संयुक्त होने के कारण उसमें जीवन अर्थात् वृद्धि तो है किन्तु जीव नहीं। यास्काचार्य ने इतना ही लिखा है कि सप्तम मास में घूमने में समर्थ होता है। गर्भोपनिषद् सप्तम मास में ही जीव का संयोग स्पष्ट रूप से कह रही है। जीव का संयोग होने पर ही भ्रूण चलने में समर्थ होता है इससे पूर्व नहीं। आचार्य यास्क ने पूरा प्रकरण ही शिशु के जन्म–विकास तथा पूर्वजन्म की स्मृति का चलाया है। विस्तार से निरुक्त में देखा जा सकता है। यही पक्ष बुद्धिगम्य प्रतीत होता है।

बी–266 सरस्वती बिहार
नई दिल्ली–110034
मों. 09627020557

त्याग का महत्त्व

● **नरेन्द्र अहूजा 'विवेक'**

त्याग मनुष्य के जीवन में सुख का मूल है। अतृप्त इच्छाएँ कामनाएँ दंश बनकर दु:ख देती हैं और सुरसा के मुख की भाँति बढ़ती कामनाएँ और अधिक पाने की इच्छा, भौतिक सुखों के संग्रह की आदत अंत में जीवन में दु:खों का कारण बनती हैं। मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा धन संतोष धन है जिसे पा लेने के बाद व्यक्ति तृप्त हो जाता है। इसीलिए वेद भगवान ने **'तेन त्यक्तेन भुंजीथा'** का आदेश देकर मनुष्यों को त्यागपूर्वक भोग करने का निर्देश दिया है। ईश्वर के उपकारों की बरसात हम सब मनुष्यों पर बड़ी सरलता और सहजता से हो रही है। यह हम मनुष्यों की पात्रता पर निर्भर करता है कि इसमें कितना एकत्रित हो पाता है लेकिन इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि हम पुरुषार्थ से अर्जित तथा ईश्वर प्रदत्त ज्ञान धन आदि में से कितना दे पाते हैं।

मनुष्य के जीवन की असली खुशी इस बात पर निर्भर करती है कि हम क्या दे सकते हैं। त्याग की खुशी का सच्चा आनंद हम जीवन में रक्तदान करते समय बड़ी आसानी से महसूस कर सकते हैं। स्वस्थ मनुष्य जब किसी घायल मरणासन्न रोगी को रक्त देकर जीवन दान दते हैं तो उस समय इस त्याग की खुशी चरम पर होती है। इसके महत्त्व को हम अपने लिए जीवन रक्षा के समय रक्त की आवश्यकता पड़ने पर महसूस कर सकते हैं। एक लौकिक उदाहरण से त्याग के महत्त्व को हम और अच्छी प्रकार से समझ सकते हैं। एक सेठ जी कथा सुनने आते और चुपचाप पीछे बैठ कर बड़े ध्यान से कथा सुनते। एक दिन जब वक्ता ने दान का महत्त्व समझाया तो उसके प्रभाव से सेठ जी ने उसी समय एक बड़ी धनराशि दान में देने की घोषणा कर दी। यह सुनकर संस्था के प्रधान ने तुरंत सेठ जी को मंच पर बैठा कर उनका स्वागत किया। इस पर सेठ जी ने टिप्पणी की ''यह सम्मान शायद मेरे धन का है'' तो तुरंत विद्वान ने सेठ जी को समझाया ''सेठ जी यह सम्मान आपकी त्याग भावना का है। यह धन तो पहले भी आपकी तिजोरी में पड़ा था लेकिन आपको सम्मान नहीं दिलवा पाया परंतु जैसे ही आपने इसका त्याग, दान भावना से किया इस त्याग भावना ने आपको समाज में सम्मान दिलवा दिया।''

वैसे भी यह एक निश्चित सत्य है कि त्याग से देने वाले के पास वह वस्तु घटती नहीं अपितु बढ़ जाती है। इसे समझने के लिए हम विद्या दान का उदाहरण ले सकते हैं। ज्ञान बाँटने से बढ़ता है। ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में त्याग के पुण्य के लाभ से मिलने वाली अच्छी नियति निश्चित रूप से त्यागी के जीवन को सुखी करती है। खुशी का सबसे बड़ा रहस्य त्याग है। संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होता है। त्याग के बिना ईश्वरीय प्रेरणा और प्रार्थना नहीं मिल पाती। मनुष्य का जीवन देने के लिए हैं लेने के लिए नहीं। उँचाई पर पहुँचकर दूसरों की भलाई के लिए बादल बन कर बरसने में ही सच्चा सुख है। वरना बड़ा हुआ तो क्या जैसे पेड़ खजूर, पंछी को छाया नहीं फल लागे अति दूर। नदी अपना नीर स्वयं नहीं पीती, वृक्ष अपने फल खुद नहीं खाते, ठीक उसी प्रकार इनसे प्रेरणा लेकर हम मनुष्यों को भी अपने जीवन में पुरुषार्थ से अर्जित तथा ईश्वर प्रदत्त ज्ञान, धन, ऐश्वर्य को त्याग पूर्वक बाँट कर सच्चे सुख को प्राप्त करना चाहिए। वैसे भी भेद भगवान ने **'केवलाघो भवति केवलादी'** कहकर स्पष्ट रूप से चेतावनी दी है कि अकेला खाने वाला पाप खाता है। इसलिए हमें जीवन में सदा बाँटकर सबके साथ मिलकर त्यागपूर्वक भोग करते हुए सुखपूर्वक रहना चाहिए।

602जीएच–53
सैक्टर 20 पंचकूला
09467608686

यज्ञ एवं कृषि, वृक्षादि तथा वनस्पति

● **डॉ. रोचना भारती**

यजुर्वेद में कहा है–

सुसस्याः कृषि स्कृधि। यजुर्वेद 4/10

वेद आदेश देता है कि हम उत्तम अन्नादि फसलों की कृषि करें एवं कराएँ। क्योंकि दूषित अन्न की उत्पत्ति का समाज के जीवन पर खराब प्रभाव पड़ता है। दूषित या मलिन पदार्थो से उत्पन्न अन्न के सेवन से समाज के व्यक्तियों के शरीर एवं मन के संस्कार भी दूषित हो जाते हैं। बुद्धि भी दूषित हो जाती है। अतः वेद ने अच्छे सुसंस्कृत अन्नों की कृषि करने का आदेश दिया।

कृषि में यज्ञ का प्रयोग इस विचार की पुष्टि के लिए हुआ कि पौधों की शक्ति मिट्टी और वायु से ली हुई सामग्री पर आधारित है। यज्ञ के कुछ भौतिक तत्त्व मिट्टी मे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, जिससे मिट्टी के तत्त्वों की पौष्टिक शक्ति बढ़ जाती है। यदि मिट्टी में पौष्टिक तत्त्व न हों तो यज्ञ की राख से उसमें पैदा हो जाते हैं। विश्व में जहाँ कहीं भी कृषि और वनस्पतियों, बागवानी के संदर्भ में यज्ञ का प्रयोग किया गया, वहाँ देखा गया कि दोनों प्रकार की फसलों में आमूल-चूल परिवर्तन होता है। वायुमंडल में पौष्टिक तत्त्व बढ़ाने से अधिक जनन–क्षमता वाले बीज पैदा होते हैं तथा उनमें अंकुर शीघ्र आ जाते हैं, पराग में अच्छे गुण पैदा होते हैं, पौधों में अधिक शिराएँ और शाखाएँ पैदा होती हैं, जिससे पौधों में जल एवं पौष्टिक तत्त्वों के संचार में वृद्धि होती है।[24]

वेद ने भूमि–संस्कार का सरल उपाय यज्ञ बताया है।

पृथिवी च मे यज्ञेन कल्पताम्। यजु. –18/12

(अर्थात् यज्ञ के माध्यम से पृथिवी को सामर्थ्यवान, बनाना चाहिए।) जिस स्थान पर कृषि करनी हो वहाँ नित्य प्रातः एवं सायंकाल सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय यज्ञ करना चाहिए। प्रातः एवं सायंकाल में किया हुआ यज्ञ उस समय बहने वाली वायु से मिलकर पृथिवी का स्पर्श करता हुआ पार्थिव कणों को यज्ञ के सुगन्धित, रोगनाशक और पुष्टिकारक पदार्थो का स्पर्श करता हुआ रोगनाशक और पुष्टिकारक पदार्थों को आहुतियों के धूम से संस्कारित करेगा। प्रातःकाल पृथिवी की ऊपरी पर्त में आर्द्रता, नमी रहती है और उस समय की वायु की गति पृथिवी की कक्षा के अनुसार गति करती है। अतः उसका घर्षण पृथिवी के ऊपरी भाग पर होने से आर्द्रता के कारण यज्ञ–धूम का उसमें विलीनीकरण या अवधारण विशेष रूप से होगा। इस प्रकार अनायास ही यज्ञ के माध्यम से कृषि भूमि उत्तरोत्तर संस्कारित होती जाएगी। इस संस्कारित भूमि में जो अन्न उत्पन्न होगा वह भी उत्तम एवं आरोग्यप्रद होगा तथा अधिक मात्रा में भी होगा। दुर्गन्धित मलों के बाद एवं रासायनिक खादों से भूमि को संस्कारित करने में जो अतिव्यय होता है उसकी कमी हो जाने से कृषकों के उत्पादन व्यय में कमी होगी और उन खादों के प्रसारण कार्य पर होने वाले व्यय की भी कमी होगी।

जिस भूमि पर यज्ञ के धूम आदि का प्रभाव होता है उसकी मिट्टी में घृत, पौष्टिक एवं रोगनाशक हवि के सूक्ष्म पदार्थों तथा मधुर पदार्थों का मिश्रण स्वभावतः बढ़ जाता है। दिन के सौर ताप से एवं रात्रि की शीतलता, आर्द्रता एवं ओस के माध्यम से हव्य पदार्थों का क्रमशः पृथिवी के कुछ नीचे के भाग मे संग्रह भी होता है और उसमें नमी का प्रभाव उत्पन्न होने लगता है जिससे कम सिंचाई में भी वनस्पतियों की वृद्धि होने में सहायता होती है तथा उपज भी अधिक होती है। इसलिए वेद ने कहा है–

कृषिश्च मे यज्ञेन कल्पताम्। – यजु. 18.9

(अर्थात् हमारी कृषि यज्ञ के द्वारा फले–फूले, समृद्धि को प्राप्त हो।) कृषि–भूमि को उपयोगी बनाते समय यज्ञ का प्रयोग किया जाए तथा बाद में भी यज्ञ किया जाना चाहिए। इससे पृथिवी में अपूर्व उत्पादन–सामर्थ्य उत्पन्न होगी। जहाँ हम कृषि के लिए बहुत व्यय करते हैं वहाँ थोड़ा व्यय यज्ञ के लिए भी करना चाहिए।

कृषि के लिए यज्ञ करने चाहिए और उन यज्ञों की भस्म खेतों में फैला देनी चाहिए। वायु और जल के माध्यम से भी यह कार्य हो सकता है। यज्ञ की भस्म कृषि के लिए बहुत उपयोगी है। यज्ञ की भस्म में उन्हीं पदार्थों की सुगन्ध सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहती है। जहाँ यज्ञ की भस्म का कृषि क्षेत्र में प्रसारण होगा वहाँ के अन्न के दाने एवं फलादि बड़े होंगे और कृषि को हानि पहुँचाने वाले कृमि तथा रोगादि भी नहीं होंगे। वेद ने कहा है–

पृथिवीं भस्मना पृण। – यजुर्वेद. 6.22

(अर्थात् पृथिवी को यज्ञ की भस्म से पूरित करना चाहिए।

आज कृषि की उन्नति के लिए विज्ञान एवं यन्त्रों का आश्रय लिया जा रहा है। यज्ञ भी वैज्ञानिक कार्य है। उसका उपयोग करके कृषि कार्य में क्रांति उत्पन्न की जा सकती है। पृथिवी को रासायनिक खादों के अनिष्टकारी परिणामों से बचाया जा सकता है। यज्ञ का प्रयोग प. वीरसेन वेदश्रमी वेदविज्ञानाचार्य ने सन् 1964 की फरवरी में एक ऐसे आम के वृक्ष पर किया जिसमें फल नहीं आते थेः यज्ञ के प्रभाव से उसमें उस वर्ष बहुत फल आए। इसी प्रकार आम, अमरूद, अनार के वृक्षों में भी यज्ञ का प्रयोग करने से उनमें फलोत्पत्ति के परिणाम ज्ञात हुए। बैंगन के खेत में यज्ञ से कीड़ों का न लगना ज्ञात हुआ। जिनके किचन–गार्डन में नित्य यज्ञ होता है उसकी सब्जियों में स्वाद की विशेषता रहती है। यज्ञ की भस्म खेत में डालने से चने के बड़े दानों का लाभ ज्ञात हुआ, अपेक्षाकृत उन खेतों के जिनमें वर्तमान खादों का प्रयोग किया गया। कृषि के लिए यज्ञ वरदान के रूप में है। यज्ञ द्वारा कृषि से वर्षा का लाभ तो होगा ही परन्तु सन्तुलित वर्षा होने से कृषि के नष्ट होने का भय भी नहीं रहेगा। यज्ञ कार्य अल्प समय में तथा अल्प व्यय से हो जाता है और उसका शुभ परिणाम बहुत अधिक देता है।

यज्ञ के द्वारा कृषि करने में कम खर्च होता है और महँगी रासायनिक खादों एवं कीटनाशी दवाइयों का व्यय घट जाने से उत्पादन व्यय में कमी होती है, जिससे जनता को अन्न सस्ता प्राप्त होगा और कृषकों के लाभ में कमी नहीं होगी, अपितु वृद्धि ही होगी। यज्ञ से उत्पन्न अन्न निर्विष होगा तो उसके सेवन से जनता निरोगी होगी; चिकित्सा पर होने वाला उनका व्यय भी घट जाने से जनता को अर्थ–लाभ होगा।

अन्नं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् – कृषिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्। यजु. 18.1 यज्ञ धूम सर्वत्र फैलकर वायुमण्डल को रोगाणुरहित कर देता है तथा वायु जल की शुद्धि से उत्तम अन्न, वनस्पति, आदि की उत्पत्ति होती है–

देवो वनस्पतिर्जुषेता हविर्होतर्यज।।

यजु. 21.46

(तू यज्ञ कर ताकि वनस्पतियाँ हवि ग्रहण करें।)

मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा।

पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा।। यजु. – 22.28

(मूल, शाखा, वनस्पति, फूल, फल, औषधि को स्वस्थ रखने के लिए स्वाहा पूर्वक यज्ञ करो।)

वेद के इन सन्देशों का प्रचार कर कृषि–कार्य में क्रान्ति उत्पन्न करनी चाहिए। यज्ञ ही कृषि का महान् यन्त्र है– यही महान् तन्त्र है और यही महान् विज्ञान है।27

सृष्टि का लालन–पालन औषधि, वृक्ष, वनस्पतियों से होता आया है। यह वृक्ष वन प्रदेशों तथा ग्रामों में अधिकता से प्राप्त होते हैं। इनके गुणों के आधार पर इनको औषधि, वनस्पति, वीरुध लता वृक्षादि नाम दिए हैं। सभी प्रकार के वृक्ष औषध आच्छादन, ईंधन, फलक (तख्त), आदि साधन द्वारा उपयोग होते हैं। ये सारभूत तत्त्व हैं, ये वर्षाजल को बढ़ाने वाले हैं तथा वनस्पतियाँ यज्ञ की आहुतियों को दिव्य तत्त्वों तक पहुँचाने वाली हैं।

यत्र वेत्थ वनस्पतये देवा देवानां गुह्यानामानि तत्र हव्यानि गामय।

ऋ. 5.5.10

(अर्थात् वनस्पतियाँ पार्थिव तत्वों के गुह्य गुणों को जानती हैं, उन देवों तक हवियों को पहुँचाती हैं।)

अश्वत्थो देव सदनः। – अथर्व. 5.4.3

वैदिक परम्परा वृक्षों में देवों का निवास मानती है।

पंच महाभूतों की भाँति वैदिक दृष्टि वनस्पतियों को अपना अन्यतम सहचर मानती है। अथर्ववेद में प्राणियों के लिए हितकारी अनेक औषधियों का वर्णन है।

यज्ञ से निकली ऊष्मा धूम को औषधि, वनस्पति वृक्ष अपने में संग्रहीत करते हैं पुनः कार्बन डाइ आक्साइड छोड़ते हैं। यज्ञीय तत्त्वों को फैलाते हैं, जिससे पर्यावरण परिशुद्ध होता है।

यज्ञ से उपज शक्ति बढ़ती है, हानिकारक कीटाणुओं का नाश होता है, वायु शुद्ध होती है, जल शुद्ध होता है, अतः पौष्टिक अन्न उत्पन्न होता है। हवन पदार्थो की सड़न को रोकता है और दूर तक वातावरण को शुद्ध करता है। यह कृमिहर antiseptics, कृमिनाशक– disinfectants, और पदार्थ संरक्षक preservatives जो दूसरे देशों में भी प्रयोग किए जाते हैं, उनमें जो दोष होते हैं, हवन की गैस उन सब दोषों से रहित है। कृषि की अधिक उपज के लिए जो पदार्थ अमेरिका आदि देशों में प्रयोग में लाए जाते हैं, उनसे जो हानि होती है, हवन की ह्रष्ट–पुष्ट वायु उन दोषों से भी रहित है। इन बातों को पाश्चात्य वैज्ञानिक भी मानने लगे हैं।

अव सृजा वनस्पते देव देवेभ्यो हविः। प्रदातुररस्तु चेतनम्।

– ऋग्वेद –

1.13.11

वनस्पति को वर्षा का कारक कहा गया है।

अश्वत्थ=पीपल, शमी, उदुम्बर=गूलर आदि वृक्षों की समिधाएँ जब यज्ञ में पड़ती हैं तो इनके धूम से वर्षा जल की वृद्धि मेघों से होती है और वह वृष्टि प्रदूषण रहित होती है। करीर सौम्य औषधि है, जिसके लिए ब्राह्मण ग्रन्थों में कहा है–

सौम्यानि वै करीराणि सौमीह त्वैवीवाहुति रमुतो वृष्टिं

त्यावयति यत् करीराणिभवन्ति। – तैत्तरीय ब्राह्मण – 1.6.4.5

(अर्थात् – करीर सौम्य औषधियाँ हैं, जिनकी आहुति यज्ञ में देते ही वृष्टि होने लगती है। वृक्षों में समिधोपयोगी वृक्ष वह हैं जो सुगन्ध, रोगनाशक, मिष्ट व पौष्टिक हों। खजूर का पेड़ (खारेक), द्राक्ष (अंगूर) की बेल,सुगन्ध के लिए चन्दन, अगर, तगर आदि की समिधाएँ तथा पुष्टि के लिए उड़द, तिल, जौ आदि पदार्थ यज्ञ मे लाभदायक हैं।

प्रदूषण को दूर करने के लिए वृक्षों का विशेष महत्त्व है अतः वृक्षों की महत्ता को स्थापित करते हुए यजुर्वेद में उनको सादर नमन किया गया है–

वनानां पतये नमः औषधीनांमं पतये नमः। –यजु. 16.18.19

वनिनः वृक्षाश्च शं भवन्तु। – ऋग्वेद 7.35.5

वनों के वृक्ष हमारे लिए सुखरूप हों।

वेदों में वृक्ष–वनस्पतियों की धारणा बनाए रखने के लिए कहा गया है कि इनके लगाने से लाभ और पुण्य की प्राप्ति होती है। वृक्षों के काटने पर दण्ड और प्रायश्चित्त के विधान का वर्णन किया गया है। पृथ्वी पर औषधियों और वनस्पतियों के कभी नष्ट न होने के लिए भी प्रार्थनाएँ की गई हैं।

पृथिवी देवजन्योषध्यास्ते मूलं मां हिंसिषंण। यजु. 1.25

मनुस्मृति में कहा गया है कि फूली हुई बेल काटने पर 'सावित्र्यादि' जप करें। – 11.142

संस्कृत साहित्य में सुभाषित है–

दश कूप समा वापी दशवापीसमो ह्रदः।

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

क्यों पढ़ें! सत्यार्थ प्रकाश

● सूरजमल त्यागी

उत्कृष्ट विचार ही किसी व्यक्ति, समाज, संस्था देश की उत्तम निधि है। जिसके पास श्रेष्ठ विचार नहीं है, अथवा अहवेलना, उपेक्षा करता है। वह एक दिन मृतप्रायः हो जाता है। बुराई को बुराई के रूप में ही देखिए। वह चाहे, दूसरों की हो। सत्यार्थ प्रकाश विश्व का एक ऐसा ग्रंथ है। जिसमें दो साँड (बैल) सदा लड़ते ही रहते हैं। जिसमें एक अच्छा दूसरा बुरा है। परन्तु जीतेगा वही! जिसे ज्यादा खिलाएगा!! आर्य समाजी भी लड़ता ही रहता है, असत्य से अज्ञान से, अन्याय से, चाहे अपने में हो अथवा अन्यों में हो।

हम सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार के लिए इतना ही कहते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश एक बहुत ज्ञानवर्धक, सत्य का बोधक ग्रन्थ है जो सबके लिए पठनीय है। सत्यार्थ प्रकाश जरूर पढ़ें? परन्तु यह भूल जाते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें? सत्यार्थ प्रकाश में ऐसा क्या अनूठापन, विलक्षणता, विशेषता, श्रेष्ठता है, जो अन्य ग्रन्थों में नहीं है। यह भी भूल जाते है कि सामने वाला श्रोता किस धर्म, मजहब, पंथ, मत से है। वह अपने सम्प्रदाय मत, पंथ की मान्यताओं, धारणाओं में कितना जकड़ा हुआ है? वह उसके घेरे तथा बाढ़े से बाहर न जाने के लिए कितना कठोर प्रतिबन्धित है? वह अपने ही सम्प्रदाय के अनुयायियों को अपना सहोदर अन्यों का गैर, पराया मानता है। वह कितना उल्लूकोवृत्ति का है? वह आपका घर, परिवार, रिश्तेदार है अथवा अन्य समुदाय का है। आपको गहन, व्यापक, प्रभावी प्रचार के लिए, आत्मिकता के साथ धैर्य, सहनशीलता बुद्धिकौशल से प्रयत्न करना पड़ेगा। आपका प्रचार कार्य इतना प्रभावी, तथ्यात्मक सत्य कथन को सम्प्रेषण करने वाला यथार्थ, इतना मार्मिक, उत्तेजक, उद्वेवेलक, हृदयस्पर्शी हो जिससे उसमें बेचैनी की टीस तड़फ से जिज्ञासा उत्पन्न हो जाए। जिससे श्रोता अपनी जिज्ञासा, बेचैनी को तृप्त करने के लिए, अपने कपड़े बेचकर, सत्यार्थ प्रकाश खरीदकर पढ़ने को तैयार हो जाए। आपका आधा–अधूरा प्रयत्न औपचारिकता से व्यर्थ हो जाएगा।

पहली बात– सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो? इस बात से श्रोता के मन–मष्तिक में एक मनोवैज्ञानिक प्रश्न उठना स्वभाविक है। सत्यार्थ प्रकाश ही ज्ञानवर्धक पुस्तक क्यों है? दूसरे ढेर सारे अच्छे–अच्छे ग्रंथ हैं। जिन्हें हम पढ़ते आए हैं। रामायण, गीता, भागवत पुराण, हनुमान चालीसा, जैन, बौद्ध, राधास्वामी, ब्रह्मकुमारी, निरंकारी, दादू पंथी, नानक पंथी–कबीर पंथी, वाम मार्ग, चार्वाक् अथवा कुरान, बाईबिल, जिन्दावस्ता, इन सब के बहुत सारे ग्रंथ है। सत्यार्थ प्रकाश ही क्यों? श्रोता अपने विचार के समर्थन में, सोचता है। ''दुकानदार भी अपने सामान को बढ़िया–अच्छा और दूसरे दुकानदार के सामान को घटिया, खराब बताकर अपना सामान बेचता है।'' अब श्रोता के मन में सत्यार्थ प्रकाश के प्रति उपेक्षा, पक्षपात, या नकारात्मकता का भाव पैदा हो जाता है।

दूसरी बात– श्रोता के नकारात्मक भाव के समाधान में, देखो भाई! अन्य ये सब ग्रंथ भी ज्ञानवर्धक हैं। किन्तु यह बताओ रामायण, भागवत् पुराण आदि पुस्तकों को तो केवल तथाकथित हिन्दू ही पढ़ते हैं। केवल हिन्दुओं के लिए ही ज्ञान वर्धक है। कुरान मुसलमानों के लिए ज्ञानवर्धक है। बाईबिल जिन्दावस्ता को भी ईसाई और फारसी मतवादी ही पढ़ते हैं। अब सब मतवादी पुस्तकें सार्वजनीन, सार्वभौमिक, मनुष्य मात्र के लिए कल्याणकारी नहीं हैं। परंतु सत्यार्थ प्रकाश मतवादी पुस्तकों को सत्य और असत्य समन्वय का ग्रंथ होने की घोषणा करता हैं। सत्य को ग्रहण करने, असत्य को त्यागने को घोषणा करता है।

तीसरी बात– सत्यार्थ प्रकाश इसलिए ज्ञानवर्धक और उपयोगी है। इस ग्रंथ में रामायण, भागवत पुराण, दर्शन, उपनिषद्, वेद, कुरान, बाईबिल, जिन्दावस्ता, बौद्ध, जैन की सभी पुस्तकों का सत्य ज्ञान संग्रहीत किया गया है। एक ही ग्रंथ से सभी धर्म, मजहब, मत, पथों की पुस्तकों का सत्य ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए सत्यार्थ प्रकाश एक सार्वजनीन, सार्वभौम, मनुष्य मात्र के लिए कल्याणकारी ग्रंथ है। सत्य को ग्रहण करने, असत्य को त्यागने की घोषणा करता है। यही इसकी विलक्षण विशेषता और ''कृण्वन्तो विश्वभार्यम्'', ''वसुधैव कुटम्बकम्'' ग्रंथ का मूल मंत्र है।

चौथी बात– सत्यार्थ प्रकाश लिखने के लिए, ब्रह्मा से लेकर जमीन पर्यन्त तीन हजार से अधिक विश्व का विभिन्न मत सम्प्रदायों की पुस्तकों का अध्ययन किया है। सत्यार्थ प्रकाश में वेद के 1542 मंत्र, मनुस्मृति के 442 श्लोक, दर्शन, उपनिषद के संदर्भ निहित हैं, कुरान की 161 आयतों के अनुवाद, बाईबिल के 89, जिन्दावस्ता के 60 तथा 377 पुस्तकों के संदर्भ लिखे हैं। सत्यार्थ प्रकाश कोई अनुवाद नहीं है। यह एक अदभुत विनियोग मीमांसा ग्रंथ है। जिसे लिखने में ऋषि दयानन्द ने अपनी दार्शनिक और वैज्ञानिक दोनों आँखें खोलकर लिखा है। इसका लेखन सामान्य कथाकार कहानीकार उपन्यासकार नहीं है। ऋषि दयानन्द सरस्वती एक आदित्य ब्रह्मचारी, त्यागी, तपस्वी, चिन्तक, परोपकारी, शास्त्र ज्ञाता, मानवतावादी, संस्कृत साहित्य का चलता, फिरता शब्दकोष है। उस सत्यवादी को यदि तोप के मुँह पर रखकर पूछे ''सत्य क्या है''। तब भी यही कहेगा ''वेद श्रुति''।

पाँचवी बात– मैक्समूलर ने अपना शोध ग्रंथ कैपीटल 34 वर्षो में लिखा था। जबकि ऋषि दयानन्द ने वर्णित सत्यार्थ प्रकाश मात्र 3 1/2 माह में ही लिख दिया था। यह ग्रंथ देशी–विदेशी 25 भाषाओं में प्रकाशित है। वेद–विरोधी, अंहकारी, मानवता–विरोधी, मतवादी लोगों ने सत्यार्थ प्रकाश पर विभिन्न प्रान्तों में 15 अपराधिक अभियोग अदालतों में चलाए हैं। प्रत्येक अभियोग में हार से ही कलंकित होना पढ़ा। इसलिए सत्यार्थ प्रकाश कालजयी दिग्विजयी अमर ग्रंथ है। इस ग्रंथ के पूर्वार्द्ध में 10 समुल्लास मान्यताओं के मण्डन है। उत्तरार्द्ध के 4 सम्मुल्लास खण्डन के हैं। ''अनुभूमिकाएँ'' और ''स्वमन्तव्यम्'' लिखकर, विलक्षणता में ग्रंथ को दर्पण ही बना दिया है।

छठी बात– विश्व के सभी धर्मों की मान्य पुस्तकों से सारगर्भित सत्य, सत्य ज्ञान, जो मनुष्य मात्र के लिए कल्याणकारी है। उसे एक पुस्तक में विनियोग से संग्रहीत किया गया है। इस ग्रंथ में 377 पुस्तकों के ज्ञान को पूर्ण प्रमाणिकता के साथ लिखा गया है। इतनी पुस्तकों के ज्ञान का अध्ययन मात्र 15 दिन में प्राप्त कर सकते हैं। इस ग्रंथ को पढ़ने से तथाकथित हिन्दू एक बहुत अच्छा हिन्दू बन सकता है। मुसलमान अच्छा मुसलमान बन सकता है। इसी तरह से इतर धर्म का कोई भी व्यक्ति बहुत अच्छा मनुष्य, इन्सान, मानव बन सकता है। सब एक दूसरे को सहोदर जैसा, अपना, अपने जैसा समझने लगता है। सत्यार्थ प्रकाश का लक्ष्य मानव समाज को वेदज्ञान के खूँटे से बाँध कर रखना है। अतः सत्यार्थ एक मात्र सार्वभौम, सार्वजनीन मानवतावादी पुस्तक है। इसलिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

अन्तिम बात– जिन लोगों ने अपने को उच्च, श्रेष्ठ, सर्वोत्तम मानकर महिलाओं, शूद्रों को पढने–पढ़ाने, सुनने–सुनाने से वंचित रखा है। उन्हें शूद्र, अछूत, त्याज्य कहकर, स्त्रियों को भोग्या, नरक का द्वार कहकर इनके साथ बहुत अन्याय, अत्याचार, अमानवीय व्यवहार किया है। कालान्तर से इनके मन–मस्तिष्क में विरोधात्मक प्रतिशोध की ज्वाला भड़क उठी! इन्होंने संगठित होकर वेद ज्ञान, उच्च वर्ग से द्वेष के कारण नास्तिक, विलास प्रिय, मत–पंथों को खड़ा कर लिया। जिससे नरबलि, पशुबलि, भूत–प्रेत, जादू–टोने, भांग–गांजा, माँस–मदिरा कल्पित, देवी–देवता, मूर्ति–पूजा, मिथ्या ज्ञान का जाल बिछा दिया था। सत्यार्थ प्रकाश के प्रभाव से–

हमारे ही हाथों से तराशे गये पत्थर के सनम।
अब भगवान बने बैठे हो बुतखाने में।।
आईना चेहरे के सब दाग बता देता है।
सत्यार्थ प्रकाश से नाराज न हो, दाग धो देता है।।
रामायण, पुराण,कुरान पढ़ो, देखो ग्रंथ हजार।
बिन सत्यार्थ प्रकाश के , पढ़ना है बेकार।।
सत्यार्थ प्रकाश वेद प्रतिपादित मानवतावादी,
सार्वभौम, मानवता को वेद के खूँटे से बाँधकर रखता है।

आर्य समाज भीमगंज मण्डी,
कोटा (राज.)
मो. 9352644260

☞ पृष्ठ 06 का शेष

यज्ञ एवं कृषि, वृक्षादि...

दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्र समो द्रुमः ।।155.114।।

(दश कूप के समान एक कुंड होता है दस कुंड के समान एक सरोवर होता है, दस सरोवर के समान एक पुत्र होता है , और दस पुत्र के समान एक वृक्ष होता है।)

अथर्ववेद में कहा गया है कि–

नाना वीर्या ओषधीर्या बिमर्ति पृथिवी। अथर्व.– 12.12

(पृथ्वी अनेक प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न औषधियों को धारण करती है।)

मानव कल्याण से वनस्पतियों का अटूट सम्बन्ध है। चरक संहिता में कहा गया है कि प्रकृति पर्यावरण प्रदूषण के कारण और वनस्पतियों के विनाश के कारण राष्ट्र को हानि पहुँचाने वाली अनेक बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं तब चिकित्सकीय गुणयुक्त वनस्पतियाँ प्रकृति की अभिवृद्धि करके मानवीय व्याधियों को ठीक कर सकती हैं।

वेदों में उल्लेख है कि मानव औषधिक वनस्पतियों को नष्ट कर पृथ्वी को दुख पहुँचाता है, तब उन्हें पृथ्वी हिला देती है अर्थात् नष्ट कर देती है –

अश्व इव रजो वि तान् जनान् य अक्षियन् पृथिवी यदजा यत।

मन्द्रोग्रेत्वरी भुवनस्य गोपा वनस्पतीनां गृभिरोषधीनाम्।।– अथर्व. 12.1.57

भावार्थ यह है कि जिन अभिमानियों ने पृथ्वी पर अत्याचार किए हैं, संसार की रक्षा करने वाली वनस्पतियों औषधियों को नष्ट किया है, वे ईश्वर के नियम से सदा नष्ट हुए हैं, जैसे घोड़ा थकावट उतारने के लिये पृथ्वी पर लोटकर शरीर की मलिन धूलि शरीर हिला कर गिरा देता है, इसी तरह पृथ्वी भी भूकम्प आदि के द्वारा अपना सन्तुलन बना लेती है।

वनस्पतियाँ, औषधियाँ मानव के लिए रक्षादायक हैं–

सोमस्त्वा पात्वोषधिभिः। अथर्व. 19. 27.2

तथा ये शान्तिदायक हैं–

ओषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिः।– अथर्व. 19.9.4

वैदिक काल में इनकी गुणवत्ता तथा महत्त्व के कारण इन्हें देवतातुल्य आदर दिया जाता था, अतः इनका संरक्षण पर्यावरण और चिकित्सकीय दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था।

7 एम.आय.डी.सी.नेता जी सुभाष चन्द्र मार्ग
मातपुर, नासिक, महाराष्ट्र–422007
मो. 09822753691

गतांक से आगे

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

तुम दोनों तो सरकारी पेंशनर हो। पेंशन बढ़ती ही है, घटती नहीं। हमारी तो बैंकों से प्राप्त ब्याज की आमदनी है जो घटती ज्यादा है बढ़ती कम है। इसी सम्वाद का अगला अंश– भाभी समझदार हैं, सलीके से रहती हैं और यह............(अपशब्दों की भरमार) कहते हुए भूल जाते हैं कि जिससे कह रहे हैं, उसकी सगी बहन उनकी पत्नी है।

अग्रज ने कहा– तुम खाली बैठे हुए हो। समय कैसे काटते होगे? मैं तो फैक्टरी जाता हूँ। दिनभर काम देखता हूँ। मेरे पास तो समय ही नहीं है। मैंने निवेदन किया कि मैं दयानन्द का कर्ज उतार रहा हूँ। उसी के चिन्तन–मनन में मग्न रहता हूँ। कोई विषय सूझने पर लेख लिखता हूँ। इसको वे निठल्लापन समझते हैं। मेरे लेखन कार्य को भी बकवास समझते हैं क्योंकि उससे कोई अर्थोपार्जन नहीं होता। केवल समय नष्ट होता है। 'लक्ष्मी के पीछे भागने वालों का यही सोच होता है। मेरा एक परम हितैषी मित्र भी कहता है– स्वास्थ्य की कीमत पर लेखन कार्य का कोई औचित्य नहीं है। फिर तुम्हारे पढ़ने–लिखने से तो कोई दुनिया नहीं बदल जाएगी। महर्षि कहते हैं किसी की मत सुनो। तुम मेरे कर्जदार हो। कर्ज चुकाने के लिए तुम वचनबद्ध हो। स्मरण हो आया मैंने एक लेख में ऐसा ही कुछ लिखा था।

मैंने सुपुत्र अमित के बीएस. सी. (मैथ्स) में उत्तीर्ण करते ही एक वर्ष बचाने और, ग्वालियर विश्वविद्यालय की अपेक्षा भारत की सिलिकोन वैली के बेंगलुरु में उत्तम शिक्षा के लिए प्रख्यात आर.वी. कालेज ऑफ इन्जीनियरिंग में, डोनेशन कोटा में प्रवेश करा दिया। एक अत्यन्त परिचित श्रीमती जी ने प्रतिक्रिया दी हमारे बच्चे तो बिना डोनेशन पढ़े हैं। जब उनका एक सुपुत्र सर्टिफिकेट/ डिप्लोमा कोर्स कम्प्यूटर साइंस में पास कर कॉल सेन्टर में लग गया तो वह शेखी बघारती थीं कि वह अमेरिकन बैंक में है। रात में भी काम करना पड़ता है। अमित प्रथम श्रेणी में एम.सी.ए. उत्तीर्ण हुआ। दस वर्ष से भी ज्यादा समय से कैलीफोर्निया, यूएसए की सिलिकॉन वैली में कार्यरत है। दो वर्ष पूर्व घर भी खरीद लिया है। अमित के अमेरिका पहुँच जाने के बाद उनके दिल पर क्या गुजरी होगी वही जानती होंगी या उनका परमात्मा। इन्ही श्रीमती जी ने नृत्य कार्यक्रम देखने और पाँच सितारा होटल में डिनर का निमंत्रण दिया। अमित ने उत्तर नहीं दिया। कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही की। गया भी नहीं। अमित माँ के बहुत करीब है, वह उसकी बैस्ट फ्रेन्ड है। उन्हें बताया माँ उन श्रीमती जी से क्या बताता कि कालेज लाइफ से ही मैं पाँच सितारा होटलों में जाता रहा हूँ।

मेरे दामाद श्री देवेन्द्र कपूर की जब दिल्ली में पद स्थापना हुई तो उन्होंने नई मारुति 800 बेचकर फोर्ड आईकोन कार खरीद ली। कारण पूछने पर बताया कि दिल्ली में मारुति वालों को हीन दृष्टि से देखा जाता है। टटपूँजिए, यतीम समझा जाता है। एक से एक महँगी कार, आलीशान कोठी खरीदने, बनवाने की होड़ लगी हुई है। परिवार में प्रत्येक व्यक्ति की, वृद्ध माँ–बाप यदि साथ रहते हों, गाड़ी मकान अलग होना चाहिए। यह स्टेटस सिम्बल या शान शौकत का दिखावा ईर्ष्या, द्वेष का ही तो परिणाम है।

आर्यजगत् के सबसे उत्कृष्ट मासिक आर्यसंसार की स्थापना से ही अवैतनिक सम्पादक रहे स्मृतिशेष वैदिक प्राध्यापक उमाकान्त उपाध्याय जी से, दूरभाष वार्तालाप के मध्य मैंने कहा कि लेख में एक सामान्य सी त्रुटि के लिए एक दिग्गज, स्थापित एवं अत्यन्त प्रतिष्ठित विद्वान ने आर्यसंसार में ही लेख लिखकर प्रतिक्रिया दी और पुनः संपर्क करने पर धो डाला। श्रद्धेय उपाध्याय जी का उत्तर था कि ईर्ष्या, द्वेष विद्वानों में सबसे ज्यादा होता है। तुम परवाह किए बिना, आगे बढ़ते रहो। अन्य प्रसंग स्मरण पटल पर आ गया। आदरणीय सुरेन्द्रसिंह कादियान जी ने कहा–स्वामी जी ने कह रखा है– इस्लाम व ईसाई धर्म की चर्चा, आलोचना व लेख प्रकाशित नहीं किए जाएँ और नहीं किसी लेखक के लगातार, या बार–बार लेख प्रकाशित होने चाहिए। इससे लेखक का महत्त्व बढ़ जाएगा। आगे कहा तुम्हारे लेख ठीक हैं पर छपेंगे काफी अन्तर से। कादियान जी के पत्र छोड़ते ही मैंने लेख भेजना बन्द कर दिया।

पत्रिकाओं की बात हो रही है तो दो एक की और हो जाय। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल, मासिक 'रवि' का प्रकाशन करती है। सन् 2002 से 2006 तक लगभग सभी लेख प्रकाशित हुए। 2006 में तत्कालीन सभा प्रधान श्री दलवीरसिंह राघव जी ने हमारी आर्य समाज, नयाबाजार, लश्कर, ग्वालियर के षडयंत्रकारी निष्कासित सभासद जितेन्द्रपाल सिंह बैस, और संभागीय उप प्रधान परमाल सिंह कुशवाह से मिलकर, 30–40 अराजक तत्वों के साथ ससम्मान धक्का मुक्की देकर मुझे आर्यसमाज से निकाल दिया। आर्यसमाज के पूर्व प्रधान डॉ. आनन्द मोहन सक्सेना, बरसों मंत्री रहे, वयोवृद्ध श्री मदनमुरारी जी और मुझे आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से भी निष्कासित कर दिया। प्रकरण न्यायलय में चला और अब उच्च न्यायलय में लंबित है। मासिक रवि में मेरे लेखों का प्रकाशन बन्द हो गया। श्री राघव जी की एकछत्र सत्ता को पलटकर आसीन श्री प्रकाश आर्य उन्हीं की नीति पर चल रहे हैं। श्री राघव जी और श्री परमाल जी कुशवाह ससम्मान उनकी कार्यकारिणी में स्थान पाए हुए हैं। और मैं वैदिक रवि से बहिष्कृत लेखक हूँ।

आर्यसमाज सन्ताक्रूज मुम्बई की पत्रिका 'नूतन निष्काम पत्रिका भी गुटबाजी का शिकार हो गई है। दो एक लेख प्रकाशित हुए थे कि आर्यसमाज सन्ताक्रूज दुर्घटना ग्रस्त हो गया। परोपकारिणी सभा अजमेर का बहुप्रचारित नारा है।, हुतात्मा पं. लेखराम का कथन कि तहरीर (लेखन) और तकरीर (शास्त्रार्थ) का काम बन्द नहीं होना चाहिए। लेकिन परोपकारी की घोषित नीति है कि परोपकारी में प्रकाशन के बाद ही लेख अन्यत्र प्रकाशन के लिए भेजा जाए। 'एक अनोखा ब्राह्मण और उसके द्वारा स्थापित कीर्तिमान' लेख मैंने परोपकारी को भेजा ही नहीं था लेकिन वह नवम्बर 2008 के अंक में प्रकाशित हुआ। क्यों कैसे, मुझे नहीं मालूम।

वर्षों मेरे लेख टंकारा समाचार और उसके बोधांकों में प्रकाशित हुए। मुख पृष्ठ पर भी लेख प्रकाशित हुए। श्री अजय सहगल जी भी परोपकारी की नीति पर ही चल रहे हैं। टंकारा समाचार नई दिल्ली, अब मेरे लेख प्रकाशित नहीं करता। मैंने भी लेख भेजना बन्द कर दिया है। महर्षि दयानन्द के कर्जदार को इस सब की परवाह किए बिना आजीवन इसी पथ पर चलना है।

कुछ प्रकरण आर्य समाज नयाबाजार लश्कर ग्वालियर से–: 'महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, सदैव अपने आपको आर्य समाज का सेवक माननेवाले स्व. पिता श्री वृजलाल खुल्लर की संतान, डीएवी नयाबाजार लश्कर का विद्यार्थी, एजी, ऑफिस में कार्यरत मुझे 1984 में संकटग्रस्त आर्यसमाज का मंत्री निर्वाचित किया गया। जुलाई 2006 तक विकट संघर्षों से जूझते हुए इस कार्यअवधि में कार्य किया।

इस काल के प्रसंगानुकूल खट्टे–मीठे अनुभवों का आप भी आस्वादन लीजिए– सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक, स्व. वेगराज जी एवं स्व. स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज वेदप्रचार कार्यक्रम हेतु पधारे थे। कार्यक्रम समाप्ति पर पं. वेगराज जी बोले भटनागर को जितनी दक्षिणा दोगे, उससे कम मैं नहीं लूंगा। मैं चौंका। मुझे ज्ञात नहीं था कि स्वामी जी का पूर्व सरनेम भटनागर था। फिर दक्षिणा की बात कुछ हुई ही नहीं थी। उनका बोलने का लहजा भी आक्रामक था। मैंने कहा– इससे आपको क्या मतलब? वह तो और भी आक्रामक मूड में आ गए सब लोग जानते हैं कि आर्यसमाज के कार्यक्रम में अप्रतिम विद्वान संन्यासी की दक्षिणा तुलनात्मक रूप से भजनोपदेशक से अधिक ही होगी। यह प्रसंग यहीं छोड़ता हूँ।

आर्यजगत के दो प्रतिष्ठित संन्यासियों की बात– दोनों आर्यसमाज के कार्यक्रमों मे विभिन्न वर्षों में आमन्त्रित थे, दोनों ने ही एक जैसी बात की थी– तुम लोग बराबर ही दयानन्द की रट लगाते रहते हो? क्या दयानन्द से अधिक काम किसी और नहीं किया? मैं पूर्णतया निरीह, अल्पज्ञ, अवाक् रह गया। सन्यासियों में भी द्वेष भावना और वह भी उसके प्रति जिसके ज्ञान के प्रकाश में स्वयं प्रतिष्ठित हुए हों। अब वे दोनों संन्यासी स्वर्गस्थ हैं। कार्यक्रम का संचालन मंत्री का ही दायित्व होता है। हमारे आर्यसमाज में भी यही परंपरा पचास वर्षों से अधिक समय से चली आ रही थी लेकिन परिस्थितियाँ बदल गईं थी। मंत्री निर्वाचित होने का सौभाग्य न मिलने पर, प्रत्येक अवसर पर कोई न कोई कह उठता – अतिथि को माल्यापर्ण करना, मंच संचालन करने का क्या आपका ही अधिकार है? ये काम और लोग भी कर सकते हैं। इन लोगों के जी की जलन शांत करने के लिए इन कार्यों से पृथक कर लिया।

अभी मेरे कुछ लेख ही पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे। रविवारीय सत्संग के पश्चात् प्रबुद्ध आर्यसमाजियों ने प्रतिक्रिया दी– फलाँ–फलाँ सभासद का लेख भी प्रकाशित हुआ था। उच्च पद से सेवानिवृत्त एक सभासद ने कहा–मैं युवावस्था में बहुत कुछ लिखता था। अभी भी कुछ पुराने लेख पड़े हैं। एक रविवार को अपना प्रकाशित लेख लिया और पढ़ा भी एक अन्य प्रतिक्रिया थी जिसमें ईर्ष्या की स्पष्ट बदबू थी और काफी लम्बी भी चली। खुल्लर जी ने कुछ 'जुगाड़' लगा लिया होगा तभी इनके लेख प्रकाशित हो रहे हैं, ये सब प्रतिक्रिया मेरे प्रति स्नेह व सम्मान की सूचक तो नहीं कही जा सकती। डाह, जलन, ईर्ष्या, द्वेष का ही स्पष्ट प्रतीक है।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई मेरा अभिनन्दन:– आर्यसमाज काकड़वाडी के स्थापना दिवस वर्ष प्रतिपदा, गुडी पडवा 2016 पर प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई और आर्यसमाज के संयुक्त तत्त्वावधान में विद्वत् सम्मान के अन्तर्गत अभिनन्दन–पत्र, स्मृति चिन्ह शाल, फूल माला और 25 हजार राशि भेंट कर मेरा सम्मान किया। यह अनेक जन की ईर्ष्या का कारण बनेगा, इससे मैं भलीभांति परिचित हूँ। मेरा तो योगदान इतना ही था कि नवीं मुम्बई निवासी मेरे परिचित प्राचार्य चन्द्रकांत मोघे के दामाद के हस्ते 'ऋषि अर्पण' आर्यसमाज नवीं बुम्बई भिजवाई थी। नवीं मुंम्बई आर्यसमाज के प्रधान श्री अरूण कुमार अबरोल जी को दी। अबरोल जी को अन्य एक प्रति बोरीवली मुम्बई निवासिनी मेरी नातिन सुश्री नीति सिब्बल ने भी दी। अबरोल जी ने सभा प्रधान मान्यवर मिठाई लाल सिंह जी से चर्चा की इसमें मुझे विद्वत् सम्मान से अलंकृत करने का निर्णय लिया गया। व्यक्तिगत रूप से मैंने इन महानुभावों के दर्शन भी नहीं किए थे।

कुछ अनुभव कार्यालयीन जीवन से:– अपने सचिव की आसन्न सेवानिवृत्ति

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

☞ पृष्ठ 02 का शेष

आनन्द गायत्री कथा

जैसे कोई विशाल गम्भीर धुन में 'ओ३म्' कह रहा हो। मेघ वहाँ गर्जते नहीं, बिजली वहाँ कड़कती नहीं। वर्षा भी इस प्रकार होती है, जैसे सन्नाटे को थामकर नीचे आ रही हो। केवल थोड़े–से, महात्मा थोड़ी–सी कन्दराओं और कुटियाओं में रहते हैं। वहाँ न हैं सिंह, न चीते, न मच्छर, न खटमल। सायंकाल से पूर्व वहाँ इक्का–दुक्का यात्री भी गंगा के इस पार आ जाते हैं। इधर केवल गंगा की ध्वनि रह जाती है और गंगा की सभी धाराएँ एक–साथ एक बड़े गड्ढे में गिरती हैं। गौरीकुण्ड कहते हैं इसे। प्रसिद्ध यह है– वहाँ बैठकर माता पार्वती ने कई वर्ष तक ध्यान लगाया था। इस कुण्ड के अन्दर लगातार गिरती हुई गंगा की ध्वनि, लगातार उठती हुई ओ३म् की ध्वनि–सी प्रतीत होती है। वहाँ यदि चित्त नहीं लगेगा तो और कहाँ लगेगा! किन्तु गंगोत्री की बात छोड़िए। मैं यह कह रहा था कि गायत्री–जाप के लिए एकान्त, शुद्ध, स्वच्छ–सुथरा स्थान होना चाहिए। कई माताएँ कहेंगी– आनन्द स्वामी! तूने सम्भवतः समझा है कि हम सबके पास बँगले और कोठियाँ हैं, हालाँकि हममें से कई लोगों का सारा घर ही एक कमरा है। इसी में सोना, इसी में खाना बनाना, इसी में बच्चे, इसी में पति है, तब शान्त–एकान्त स्थान कहाँ मिलेगा? क्या तू हमारे घर में उथल–पुथल मचाना चाहता है? नहीं मेरी माताओ! उथल–पुथल मचाने की इच्छा नहीं है मेरी।

लखनऊ की एक बात आपको सुनाता हूँ। एक देवी मेरे पास आई। मुझसे उसने गायत्री के जाप की विधि पूछी। मैंने कहा– "प्रातः तीन बजे स्नान आदि से शुद्ध होकर जाप किया करो।" तीसरे दिन वह मेरे पास आई; बोली– 'मेरे पति ने मुझे घर से निकाल दिया है।" मैंने आश्चर्य से कहा– "घर से, क्यों?"उसने बताया– "घर में केवल दो कमरे हैं। एक कमरे में सब लोग सोते हैं। दूसरे में प्रातः उठकर स्नान करने लगी तो स्नान करने का शब्द हुआ, गला साफ करने का, कोई बर्तन इधर–उधर रखने का, कुछ पानी गिरने का। पतिदेव की आँख खुल गई। क्रोध में बोले– 'बड़ी भक्ति सवार हो गई है! रात को सोने भी नहीं देती। दिन–भर कार्यालय में आराम नहीं, रात को यह नहीं सोने देती।' दूसरे दिन इतनी सावधानी से काम लिया, यत्न किया कि शब्द न हो, किन्तु बर्तनों का शब्द फिर से हो गया। पति महाराज उठकर बैठ गए, चिल्लाकर बोले– 'भक्ति करनी है तो जा समाज–मन्दिर में! मेरे घर में यह सब–कुछ नहीं चलेगा। निकल यहाँ से!' मैंने उनसे कहा– 'देखो देवी! स्नान करना आवश्यक नहीं। वास्तविक बात तो जाप करना है। स्नान का यदि सुभीता नहीं तो स्नान न करो। जैसा स्थान मिलता है वैसे ही स्थान पर जाप करो, स्नान करना तो छोटी बात है।"

परन्तु क्या करें, हमारे देश में कई छोटी–छोटी बातें ही बड़ी–बड़ी बातें बन गई हैं और बड़ी बातों को भुला दिया गया है। अब प्रयाग के कुम्भ के मेले को देखिए। मेला होता था इसलिए कि लोग साधु और महात्माओं से ज्ञान की बातें सुन सकें। यह बात तो भुला दी गई। स्नान करना ही कुम्भ के मेले पर जाने का वास्तविक उद्देश्य हो गया। एक विशेष स्थान पर ही स्नान करना चाहिए– इस भ्रम ने कितने ही मनुष्यों की जान ले ली। उन्होंने समझा कि स्नान करने से मुक्ति होती है। ढाई हज़ार की तो मुक्ति हो गई वहाँ।

नहीं, छोटी बात को बड़ी बनाने का प्रयत्न नहीं करना। इसके लिए बड़ी बात को छोड़ नहीं देना। जो जैसा हो, वैसे ही जाप करे। मैं किसी के घर में उथल–पुथल मचाने नहीं आया हूँ। मैं आनन्द स्वामी हूँ, दुःख का स्वामी नहीं हूँ। कई मनुष्य कहते हैं कि ऐसी अवस्था में भजन कैसे कर सकता है? उन्हें एक बात सुनाता हूँ–

एक था किसान। नए कुँए के पास गद्दी पर बैठा बैलों को चला रहा था। बैल चलते थे, पानी कुएँ से बाहर आता था। कुएँ में लगी हुई माला नीचे जाती थी और वह पानी लेकर ऊपर आती थी। इससे चीं–चीं की ध्वनि होती थी। एक मनुष्य अपने घोड़े को पानी पिलाने के लिए वहाँ आया। परन्तु घोड़ा चीं–चीं की ध्वनि से डरा, पीछे हट गया। उस आदमी ने उस घोड़े को फिर आगे किया; परन्तु वह फिर डरा और पीछे हट गया। घोड़ेवाला घोड़े की लगाम पकड़कर खड़ा हो गया। कुछ देर बीत गई तो किसान ने पूछा– भाई! क्या बात है?' घोड़ेवाले ने कहा– 'घोड़े को पानी पिलाना है।' किसान ने कहा– 'तो पिलाओ न!' घोड़ेवाला बोला– 'घोड़ा इस चीं–चीं की ध्वनि से डरता है। यह बन्द हो जाए तो इसे पानी पिलाऊँ।' किसान ने हँसकर कहा– 'अरे भोले मनुष्य! यदि यह चीं–चीं बन्द हो गई, तो पानी भी बन्द हो जाएगा। घोड़े को पानी पिलाना है तो इसी चीं–चीं में पिला लो, नहीं तो घोड़ा प्यासा रह जाएगा।'

सुनो मेरी माताओ और सज्जनो!

यदि कोई दूसरा स्थान न मिले तो घर और बच्चों की चीं–चीं में जाप करो। मन के घोड़े को पानी पिला लो, नहीं तो फिर समय नहीं मिलेगा।

.... क्रमशः

☞ पृष्ठ 08 का शेष

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं ...

और उससे पहले लम्बी अवधि के लिए अवकाश पर जाने के कारण कार्यालय प्रमुख महालेखाकारी महोदय आदरणीय सुधा साहब ने सचिव की खोज प्रारंभ की। अन्य नामों के अतिरिक्त मेरा नाम भी सुझाया गया। सचिव पद लेखाधिकारी का ही होता है। और मैं उस समय सहायक लेखाधिकारी था। महालेखाकारी महोदय ने मेरा चयन किया। इस चयन में मेरा योगदान शून्य होने पर भी न जाने कितने लेखाधिकारियों के जी की जलन का कारण बना, वे जानते होंगे या उनका परमात्मा।

मुझे अनुभाग अधिकारी प्रोन्नत हुए दो या तीन वर्ष ही हुए थे आपातकाल के कारण पूरा देश कम्पायमान था। मैं यथावत काम करता रहा। पूरा नाम भूल रहा हूँ श्री सिंह हमारे ग्रुप के प्रमुख थे लेखाधिकारी पद पर आसीन। कार्य और व्यवहार का वार्षिक मूल्यांकन जिस प्रपत्र में किया जाता है उसे कैरेक्टर रौल कहते हैं और आगामी प्रोन्नति का आधार भी वही प्रपत्र होता है। यह अत्यन्त गोपनीय रहता है, खासकर सम्बन्धित कर्मचारी से। मोतीमहल में मेरा कार्यस्थल ग्राउन्ड फ्लोर पर था और श्री सिंह का चैम्बर ऊपरी मंजिल पर जिसके जीने बहुत ऊँचे और घुमावदार थे। पूरे आपात्काल की अवधि में सिंह अनुभाग में निरीक्षण के लिए नहीं आए जबकि अन्य अधिकारी दिन में दो–तीन चक्कर लगाते थे। मैंने उनसे कहा कि आप भी कभी–कभी आ जाया करें। उनका उत्तर था, सब ठीक चल रहा है फिर क्यों आऊँ?

कार्य रिपोर्ट तो उनके पास ही जाती ही थी। एक दिन एक वरिष्ठतम लेखाधिकारी महोदय मेरे अनुभाग के पास से निकल रहे थे। मुझे देख कर रूक गए। मुझसे पूछा– तुमने ऐसा क्या जादू किया, चक्कर चलाया कि सिंह साहब ने हाल ही के छोकरे को सभी कैटेगरी में ए, सर्वोत्तम रिमार्क दिया। उनका यह कथन द्वेष की किस श्रेणी में रखा जाऐगा? मैं तो अत्यन्त खुद्दार पिताश्री की घुट्टी में मिली सीख का 38 वर्ष के सेवाकाल में मनोयोग पूर्वक पालन कर कार्य करता रहा। सीख थी–पूरी मेहनत और मन लगाकर काम करना। स्वाभिमान बेच कर जीना नहीं पड़ेगा।

कार्यालय प्रमुख महालेखाकार महोदय लेखाधिकारियों की मीटिंग बुलाते ही थे। मुझे नहीं मालूम कि एकाग्र चित्त से सुनने के कारण या जिस काम के निर्देश देने के लिए मीटिंग बुलाई गई थी, पहले ही पूर्ण कर लेने के कारण झपकी ले लेता थे। वैसे ही जैसे युवा सम्राट राहुल गांधी लोकसभा में गंभीर चर्चा के दौरान ले लेते हैं। एक ईष्यालु सहयोगी ने धीरे से पड़ौसी अधिकारी से कहा ए.जी साहब हमको लतिया रहे हैं और खुल्लर झपकी ले रहा है, उससे कुछ नहीं कहते।

द्वेष के अन्य कारण व उदाहरणः– द्वेष के कारण ही मैं की तृप्ति के लिए मनुष्य अनावश्यक अद्भुत कार्य करता जाता है। 50–60 के दशक में हमारे प्रदेश के एक मुख्यमंत्री का निज निवास व्यापक चर्चा का विषय बना रहा। उस जमाने में निवास की लागत दस करोड़ बताई जाती थी। आज के युग में तेलंगाना के मुख्यमंत्री ने हजारों करोड़ रूपये का परिसर बनवाया है। मुकेश अंबानी दस करोड़ रूपए का बंगला बनवाकर ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। करोड़ों भारतीय जन में कितनी ईर्ष्या, कितना विद्वेष जाने–अनजाने में पैदा किया, इसकी उन्हें खबर ही नहीं, चिंता भी नहीं, परवाह भी नहीं, रतन टाटा ने टिप्पणी की थी कि मकान पर इतना अधिक व्यय करने की अपेक्षा जन कल्याण पर व्यय किया होता तो ज्यादा अच्छा होता। मेरे कनिष्ठ भ्राता लव कुमार जी ने प्रसंग चलने पर बताया था कि जमशेद जी टाटा से लेकर रतन टाटा तक ने अपनी व्यावसायिक सफलता से भी अधिक राष्ट्र कल्याण, जन कल्याण का ध्यान रखा है। वे आज भी उस देश के उपकार का ऋण चुकाते हैं, जिसने ईरान से विस्थापित पारसियों को आश्रय दिया था। विस्थापित पारसियों के ऋण चुकाने का तरीका उन आततइयों को भी अपनाना चाहिए जो हजार–आठ सौ वर्ष हुकूमत करते रच बस गए और अभी भी विद्रोह के स्वर यदा कदा उठा दिया करते हैं।

विषय को जिस प्रकार मैंने समझा, चिन्तन–मनन में दस दिन से लगभग 50–60 घंटे श्रम किया तो इतने पृष्ठ तो मुझे रंगने ही थे। समापन करते हुए यही कहना चाहूँगा कि अस्सी वर्ष के दीर्घकालीन जीवन में, अथर्ववेद के इन छः मंत्रों की अंतिम वाक्यावली के समर्थन में अनुभूत सत्यों को शाब्दिक आवरण नहीं पहनाता तो विषय के साथ न्याय नहीं होता और न ही लेखन का असर होता। सत्य अत्यन्त विश्वसनीय एवं मार्मिक होता है। महर्षि दयानन्द भी सत्य को चाशनी में लपेटकर नहीं परोसते थे। उनका अनुचर, मैं, इस तथ्य को कैसे भूल सकता हूँ। द्वेष का सत्य जैसे सुना, समझा वैसा ही अंकित किया है। इसलिए यह लेख अनेक व्यक्तियों को, निकटस्थ लोगों को भी सत्योद्घाटन के कारण अप्रिय प्रतीत होगा। प्रियजनों के स्नेह–आदर से वंचित होने का भय शक्तिशाली विरोधियों के कोप का भय, विद्वानों और स्वयंभू संन्यासियों की कृपा से वंचित हो जाने की आशंका, मुझे सत्य का यथार्थ वर्णन करने से नहीं रोक पाई। मृत्यु के मुहाने पर खड़ा हुआ, मैं सोचता हूँ–

चाह गई, चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह।
जिन्हें कछु न चाहिए, वे ही शहंशाह।।

22 नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज
लश्कर, ग्वालियर, म.प्र. 474001
मो. 9516622982

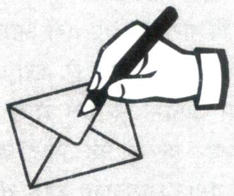

पत्र/कविता

माँ के आशीर्वाद से वह अंतरिक्ष में गया

1970 के दशक में भारत में अंतरिक्ष यात्री बनने का स्वप्न दुर्लभ ही नहीं असम्भव हैं। परन्तु माँ के आशीर्वाद और अंतरिक्ष यात्री बनने के जुनून ने राकेश शर्मा सफलता दिलाई।

1970 में उन्हें वायुसेना में पायलट बनने का अवसर प्राप्त हुआ। वायुसेना के विमानों की उड़ान भरते राकेश शर्मा के मन में केवल एक जनून सिर पर सवार होता था कि ज्यादा से ज्यादा दूर तक में हवाई जहाज उड़ाता रहे। 1972 पाक के युद्ध में भी उन्होंने अपेक्षा से ज्यादा साहसिक उड़ानें भरी।

पाक युद्ध के उपरान्त भारत सोवियत रूस के संयुक्त अंतरिक्ष कार्यक्रम मे राकेश को भी प्रवेश करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस प्रशिक्षण के लिये उनको 72 घंटो के लिये एक छोटी सी अंधेरी कोठी में रखा गया जिसमें केवल कृत्रिम रोशनी थी और लम्बे अन्तराल के उपरान्त कुछ रासायनिक दवाओं की एक खिड़की से खुराक दी जाती थी और अंतरिक्ष विशेषज्ञ मनोवैज्ञानिक प्रश्नों का आदान प्रदान करते थे।

उस प्रशिक्षण के उपरान्त श्री राकेश को रूस की एक अंतरिक्ष प्रयोग शाला में प्रशिक्षण दिया गया जिसके सफल रहने के उपरान्त उनको अंतरिक्ष यात्रा के लिये चयनित किया गया। जिस दिन अंतरिक्ष यात्रा में जाना था तो सर्व प्रथम राकेश ने टेलीफोन पर अपनी माँ से आर्शीवाद लिया जिनकी प्रेरणा से वह इस ऐतिहासिक यात्रा पर जाने में सफल हुआ।

श्री राकेश शर्मा सिकन्दराबाद (तेलांगना) का निवासी रहे हैं। उनके माता–पिता अत्यन्त धार्मिक थे। चचेरे भाई ने श्री राकेश को एन.डी.ए. में दाखिल कराया और इनमें सफलता मिलने पर वह वायुसेना में पायलेट बन सका। माँ का आशीर्वाद जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि होती है जिसके चलते मानव ऊंची से ऊंची उपलब्धियाँ प्राप्त करता है।

कृष्ण मोहन गोयल
बाज़ार कोट, अमरोहा

****

यह भारत की रीति

वे चपटा कहते रहे हम भूगोल–खगोल।
भारत भारत ही रहा पंख ज्ञान के खोल।।
'असतो मा सदगमय' कह परिचय दिया विराट।
सत्य–स्नेह मल शीश पर केश दिये खल्वाट।।
'तमसो मा ज्योतिर्गमय' जीवन सूर्य–समान।
एक हाथ में है कमल दूजे तीर–कमान।।
'मृत्योर्मा अमृतंगमय' जिया पिया सत–सोम।
भारत ने हरदम किया जग में परहित होम।।
पहले कभी ने छोड़ते यह भारत की रीति।।
मिल–जुलकर यदि हम चलें क्या है पापिस्थान।
इक थप्पड़ में छाप दें मुख पर हिन्दुस्तान।।
संस्कृत बिन संस्कृति नहीं संस्कृति बिन क्या प्रेष्य।
बिना वीरता वीर क्या निरुद्देश्य–उद्देश्य।।
'संगच्छध्वं'–सोम पी बनो सूर्य से शूर।
बलिदानों की भूमिका लाती रंग जरूर।।
अपने 'चंदन' का दिया तिलक 'उदय' के भाल।
'पन्ना' पर वारे जगत हीरे–मोती–लाल।।
वर्षा सर्दी धूप में खड़े लखन–सिय–राम।
भारत माता आज भी आहत–दुखी–गुलाम।।
जिनका हिस्सा दे दिया बँटवारे के नाम।
फिर–फिर कर फिर माँगते हिस्सा वे गुलफाम।।
'गाओ वन्देमातरम्' बिना रोक बिन टोक।
देशभक्ति के सोम को पी लो करके ओक।।
इच्छा है तिलकित करूँ महाकाल का भाल।
भारत में फिर से मिले मानसरोवर–झाल।।
मैं भी चढ़ा मचान पर तू भी चढ़ा मचान।
मैंने छोड़ी आरती तूने तजी अजान।।
किन पचड़ों में पड़ गये भूले लक्ष्य महान।
रक्त बहाने पर तुले दो दिन के मेहमान।।

डॉ. सारस्वत् मोहन मनीषी
A–1/13–14 सेक्टर –16
रोहिणी, नई दिल्ली–110085
मो: 9810835335

महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्य समाज ढूँढ रहे है

पाठक वृन्द शीर्षक देखकर चौंकिये नहीं यह कोई मनगढ़न्त या काल्पनिक बात नहीं है। यह हकीकत है, समय मुझे ठीक से याद नहीं, यह घटनाक्रम सन् 1995 के आस–पास दो–तीन साल आगे या पीछे का समय रहा होगा। मैं कलकत्ते से अपने गाँव लोहारु जिला– भिवानी हरियाणा गया हुआ था।

एक रात सपने में एक लड़का दौड़ता हुआ, मेरे घर आया बोला भईया एक स्वामी जी आर्य समाज का पता पूछ रहा है। मैं भी दौड़ा–दौड़ा बाज़ार में गया, वहां जाकर देखता हूँ, एक स्वामी जी जिनका चेहरा इतना दमक (चमक) रहा था। स्वामी जी का चेहरा तो देखना दूर की बात स्वामी जी के कपड़े भी मैं उस चमक में एक झलक के रूप में देख पा रहा था। मैंने स्वामी जी को प्रणाम करके कहा मैं आपको लोहारू आर्यसमाज ले चलता हूँ। स्वामी जी ने कहा मैं वहाँ से लौट कर आ गया वहां आर्य समाज नहीं मिला। मैने फिर कहा स्वामी जी मैं कलकत्ते जा रहा हूँ। आप मेरे साथ चलें। दिल्ली में बहुत आर्य समाज हैं। सार्वदेशिक सभा का कार्यालय भी है। स्वामी जी ने फिर कहा मैं वहाँ से भी लौट कर आ गया वहां भी आर्य समाज नहीं मिला। मैने फिर साहस करके कहा स्वामी जी आप मेरे साथ सीधे कलकत्ता चलिए, स्वामी जी ने फिर वही बात दोहरायी और जाते समय बोले मैं खुद ढूंढ लुँगा।

कुछ दिनों महीनों या एक दो साल बाद मुझे ठीक से याद नहीं, मैं बस से कहीं जा रहा था। रास्ते में देखता हूँ एक जगह कुछ लोग एक सभा कर रहे हैं। उस सभा में स्वामी दीक्षानन्द जी को सार्वदेशिक का प्रधान बनाने का प्रस्ताव रखा पर सहमति नहीं बनी। उस सभा में या उसके बाद वाली सभा में स्वामी ओमानन्द जी झज्झर वाले पर सहमति बनी। स्वामी ओमानन्द जी सार्वदेशिक सभा के प्रधान बने और स्वामी सुमेधानन्द जी सीकर वाले कार्यकर्ता प्रधान बने थे। आप इस तरह समय और साल का पता लगा सकते हैं।

स्वामी सुमेधानन्द जी कलकत्ते आये थे और कहा था अब सभी संन्यासी, विद्वान् संन्यासियों की सभा होने वाली है, आर्य समाज का संगठन मजबूत हो गया। स्वामी जी के कलकत्ता से चले जाने के कुछ दिनों बाद सपने में देखा। लाला रामगोपाल शालवाले का पुर्नजन्म हो गया और एक ही दिन में बच्चे से पूर्ण जवान हो गये हैं। बाद में पता चला कि स्वामी ओमानन्दजी को सार्वदेशिक सभा से हटाकर कैप्टन देव रत्न आर्य को सार्वदेशिक सभा का प्रधान बना दिया गया। इस घटना के लगभग 20 साल हो गये होगें। स्थिति पहले से बदतर है। सार्वदेशिक सभाएं तीन–तीन हो गयीं, सभी प्रांतों में भी तीन–तीन प्रतिनिधि सभाएँ हो गईं। यह लगता है महर्षि दयानन्द सरस्वती अब भी आर्य समाज ढूँढ रहे हैं। पाठकों से निवेदन है यह है कि यह कोई मनगढ़न्त बात नहीं है, हकीकत है। इस विषय मे किसी भी प्रकार का प्रश्न हो, तो मैं उसको संतोषजनक उत्तर दूँगा। हो सके तो आर्य समाज को ढूँढने में अपना सहयोग करें।

सधन्यवाद

सुरेश कुमार अग्रवाल
167, जैसोर रोड, क्लब टाउन ग्रीन्स
ब्लाक–2, फ्लेट–3 के कोलकाता–700055
मो.–9831847788

****

डी.ए.वी. स्कूल पिहोवा में छः दिवसीय चरित्र निर्माण शिविर आयोजित हुआ

डी.ए.वी. स्कूल में दसवीं कक्षा के छात्र–छात्राओं का छः दिवसीय चरित्र निर्माण शिविर आरम्भ किया गया। इस शिविर का शुभारम्भ एस.डी.जे.एम्, मैडम रजनी कौशल व सिविल जज पिहोवा, श्री अमितेन्दर जी के करकमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके हुआ। शिविर के बारे में जानकारी देते हुए स्कूल प्रधानाचार्य श्री एन.सी.बिंदल जी ने बताया कि इस शिविर में योगा, अभ्यास, हवन तथा अनेक प्रकार के महानुभावों के भाषण आदि आयोजित करवाए गये जिसमें बच्चों का मानसिक, शारीरिक व् चारित्रिक विकास हो। शिविर बच्चों के लिए निःशुल्क आयोजित किया गया। शिविर का समय सुबह 6:30 से शाम 5:00 बजे

तक रहा। शिविर में जो महान विभूतियां आई वे इस प्रकार हैं............. आर्मी हैड क्वाटर अम्बाला कैंट से ब्रिगेडियर एस.एन. लवी व विंग कमांडर श्री पूनम सैनी जी, कुरुक्षेत्र से रोजगार अधिकारी, एस.डी.एम. पेहोवा, डी.एस.पी पिहोवा, डॉ मालिक (चेयरमैन फिजिकल एजुकेशन डिपार्टमेंट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी), डॉ. जोशी (चेयरमैन साइकोलॉजिकल डिपार्टमेंट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी) आदि। इस शिविर के समापन समारोह में श्रीमती लतिका शर्मा (विधायक कालका) मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की प्रधानाचार्या ने सभी अतिथियों का बच्चों को प्रोत्साहित करने हेतु आभार व्यक्त किया।

सोहन लाल डी.ए.वी. कॉलेज की प्राध्यापिकाओं ने हिन्दू यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिका में शोध पत्र प्रस्तुत किया

हाल ही में चार और पांच मई 2017 को हिन्दू यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिका, ओरलैण्डो, फलोरिडा में एक अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस का आयोजन किया जिसमें सोहन लाल डी.ए.वी. कॉलेज ऑफ एजूकेशन अम्बाला शहर की प्राध्यापिकाओं, डॉ. नीलम लूथरा एसोसिएट प्रोफेसर एवं डॉ. सतनाम कौर, एसोसिएट प्रोफेसर ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। डॉ. नीलम लूथरा ने 'श्री अरविन्द का श्री मद्भगवद्गीता विषयक चिन्तन और उसकी आधुनिक प्रासंगिकता'' पर पत्र पढ़ा और डॉ. सतनाम कौर ने ''श्री अरविन्द का समग्र मानवीयता पर चिन्तन'' विषय पर पत्र पढ़ा।

इस उपलब्धि के लिए प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली एव समस्त स्टाफ ने दोनो विदुषियों का कॉलेज में अभिनन्दन किया और उनका स्वागत किया। डॉ. कोहली ने बताया कि इस महाविद्यालय के दो विद्वान साथी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शोध पत्र प्रस्तुत करके आए हैं और यह न केवल हमारे कॉलेज के लिए गौरव एवं सम्मान की बात है बल्कि हमारी यूनिवर्सिटी और हरियाणा राज्य के लिए भी प्रशंसनीय बात है कि इन प्राध्यापकों ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति एवं मूल्यों पर अपने विचार प्रस्तुत किए और विदेशी श्रोताओं को भी प्रभावित किया।

डॉ. कोहली ने यह भी बताया कि इस अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस के उद्घाटन समारोह पर डॉ. नीलम लूथरा ने श्री कृष्ण स्तुति का गायन किया और उसका इग्लिंश में अनुवाद भी प्रस्तुत किया जिसे भारतीय और विदेशी श्रोताओं ने बहुत सराहा। प्रश्नोत्तर सत्र में डॉ. सतनाम कौर ने श्रोताओं के प्रश्नों का भी समाधान किया।

बारह स्कूलों में हुईं बाईस प्रतियोगिताएँ

वैदिक शिक्षा परिषद् फाजिलका ने ''वैदिक संस्कृति संरक्षण अभियान–2017 '' के अन्तर्गत विभिन्न स्कूलों में वैदिक संस्कृति से पश्चिम करवाने हेतु अत्यन्त सघन एवं व्यस्ततम कार्यक्रम का आयोजन किया। अभियान के संयोजक वेदप्रकाश शास्त्री के अनुसार इसमें बारह स्कूल सम्मिलित हुए। 12 दिनों 22 प्रतियोगिताएं सफलता पूर्वक सम्पन्न हुईं।

1. सरकारी मॉडल सी.से. स्कूल कौड़ियांवाली। पर्यावरणीय महायज्ञ के पश्चात्– (क) पर्यावरणीय निबन्ध प्रतियोगिता विषय –वृक्ष लगाओ, वृक्ष बचाओ। (ख) पर्यावरणीय सुलेख प्रतियोगिता। (ग) पर्यावरणीय भाषण प्रतियोगिता विषय

(1)''रहिमन पानी राखिए, पानी बिन सब सून।

(2)ध्वनि प्रदूषण का दबाव, घटती श्रवण शक्ति–बढ़ता तनाव।

(3) वायु प्रदूषण का गम– रुकती सांसें घुटता दम।

(4) किसान कहे मिट्टी से – ''उपज घटी, और बिगड़ गई क्यों तेरी काया।''
बुझे मन से वह बोली –''भैया, मानव ने ही तो दूषित मुक्षे बनाया।।''

डी.एम. पब्लिक स्कूल में (क) ईश वन्दना गायन प्रतियोगिता। (ख) सुलेख प्रतियोगिता (ग) प्रार्थना गायन प्रतियोगिता। **3. सरकारी कन्या सी.से. स्कूल–** (क) संस्कृत सुलेख प्रतियोगिता (ख) पथ संचलन गीतम् प्रतियोगिता। **स्वामी दयानन्द मॉडल स्कूल–** ओंकार महिमा गायन प्रतियोगिता। **डी.सी. डी.ए.वी.सी.से. स्कूल**–वेदमन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता। **सर्वहितकारी विद्या मन्दिर** – (क) प्राइमरी ग्रुप–संस्कृत शिशु गीतम् प्रतियोगिता (ख) धर्मशास्त्रीय श्लोक गायन प्रतियोगिता। **इकजोत पब्लिक स्कूल–** (क) कलात्मक गायत्री सुलेखन प्रतियोगिता (ख) महर्षि दयानन्द चित्रावली प्रतियोगिता **एस.डी.सी.से. स्कूल–** गीता श्लोक गायन प्रतियोगिता। **कौटिल्य इण्टरनेशनल पब्लिक स्कूल–** (क) मातृभूमि वन्दना गायन प्रतियोगिता (ख) सीमा के प्रहरी– सामूहिक गायन प्रतियोगिता। **सरस्वती विद्या मन्दिर–** (क) सरस्वती वन्दना गायन प्रतियोगिता। (ख) मौखिक गायत्री सुलेखन प्रतियोगिता। (ग) शान्ति पाठ– संस्कृत हिन्दी सामूहिक गायन प्रतियोगिता। **रेनबो डे बोर्डिंग स्कूल** – (क) गोमाता गायन प्रतियोगिता (ख) आरती हिन्दी की–गायन प्रतियोगिता। **चाणक्य स्कूल**–बाल्मीकि रामायण श्लोक गायन प्रतियोगिता।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 07/08-06-2017

हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर में हुआ वैदिक चेतना शिविर का आयोजन

हंसराज महिला महाविद्यालय के प्रांगण में प्राचार्या प्रो. डॉ. श्रीमती अजय सरीन के दिशा–निर्देश में पांच दिवसीय वैदिक चेतना शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें शिविरार्थी छात्राओं को वैदिक परम्पराओं व मूल्यों के प्रति जागरुक किया गया।

शिविर का शुभारंभ आर्य समाज, विक्रमपुरा जालन्धर के सचिव प्रिंसीपल इन्द्रजीत तलवाड़ द्वारा शिविरार्थी छात्राओं को वैदिक साहित्य व मूल्यों के प्रति सजग करते हुए प्राचीन भारत की गरिमा व वैदिक धराहेर ध्यान–प्रक्रिया के महत्व प्रतिपादन के साथ हुआ। अमेरिका से विशेष रूप से पधारे विद्वान् वक्ता डेनियल स्वैमस्र व थॉमस जी जैम्स ने भावातीत ध्यान–प्रक्रिया को महिमा–मंडित करते हुए उसे व्यक्ति व समाज के समुन्नत विकास में महत्पूर्ण बताया।

शिविर के दूसरे दिन श्रीमती अर्चना कपूर ने सृष्टि के मूल नाद ओ३म् के उच्चारण की विशेषता की बात की। तीसरे दिन डॉ. चन्द्रशेखर ने प्राचीन भारतीय अमूल्य धरोहर हवन के वैज्ञानिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए आज के प्रदूषित वातावरण में इसे पर्यावरण शुद्धि के लिए आवश्यक बताया। चौथे दिन श्रीमती अर्चना कपूर ने छात्राओं को योग का परिचय देते हुए विभिन्न आसनों का अभ्यास कराया। छात्राओं को विभिन्न सामाजिक समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से कई प्रतियोगिताएं करवाई गईं। त्वरित भाषण प्रतियोगिता में छात्राओं ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

शिविर के समापन समारोह में सर्वप्रथम यज्ञ किया गया। समारोह के मुख्यातिथि सुप्रसिद्ध एडवोकेट श्री अशोक परुथी ने छात्राओं को लोकमंगल व लोक कल्याण की दिशा में अग्रसर होने के लिए वैदिक संस्कृति से जुड़ने की बात की। प्राचार्या प्रो. डॉ. श्रीमती अजय सरीन ने प्राचीन बौद्धिक संपदा वैदिक ज्ञान–विज्ञान पर प्रकाश डालते हुए छात्राओं को सद्गुण धारण करने पर बल दिया। प्राध्यापक प्रद्युम्न ने भजन–प्रस्तुति से सुन्दर समां बांधा। प्रतियोगिताओं में विजेता छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। रामारोह में कैम्प को–आरडीनेटर डॉ. एकता खोसला, शिविर–संचालिका श्रीमती सुनीता धवन, श्रीमती कुलजीत कौरए डॉ. ज्योति गोगिया सहित कॉलेज के टीचिंग व नॉन–टीचिंग के सदस्य उपस्थित थे। ऋषि–लंगर के साथ शिविर संपन्न हुआ।

गोद ली हुई शर्मीला ने डी.ए.वी. समाना का नाम रोशन किया

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल समाना के दसवीं की बोर्ड आधारित परीक्षा के परिणाम में स्कूल की छात्रा शर्मीला ने 10/10 अंक प्राप्त करके स्कूल का नाम रोशन किया। इस छात्रा के पिता डी ए वी स्कूल समाना में सफाई कर्मचारी के रूप में सेवा कर रहें हैं। इस छात्रा को प्रारंभ से ही स्कूल की तरफ से मुफ्त शिक्षा प्रदान की जा रही है तथा प्रधानाचार्य डॉ. मोहन लाल शर्मा जी के प्रयासों के फलस्वरूप ही पब्लिक कॉलेज सामना ने भी इस बच्ची को गोद ले लिया गया है। वहाँ भी इसे मुफ्त शिक्षा प्रदान की जा रही है। छात्रा के परिवार के सदस्यों ने प्रधानाचार्य जी का धन्यवाद किया।

डी.ए.वी. गिदड़बाहा में आयोजित हुआ मातृ दिवस

जगन्नाथ जैन.डी.ए.वी. सी. सै. पब्लिक स्कूल, गिदड़बाहा (पंजाब) में मातृ दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। मातृ दिवस का शुभारंभ मंत्रोच्चारण और तिलक द्वारा किया गया। विद्यार्थियों ने गीत–संगीत, कविता, नृत्य के माध्यम से माँ के महत्त्व को समझाया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न खेल गतिविधियों द्वारा माताओं का मनोरंजन करवाया गया और प्रतियोगियों को इनाम भी बाँटे गए। कुछ माताओं ने इस कार्यक्रम के दौरान अपने विचार सबके समक्ष रखे। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्या सुश्री मोनिका खन्ना जी ने अपने सम्बोधन में बताया कि ''मातृमान्पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेदः'' यह शतपथ ब्रह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् माता–पिता, आचार्य होवे तो मनुष्य ज्ञानवान और बुद्धिमान होता है। वह कुल धन्य है, वह संतान बड़ी भाग्यवान है जिसके माता–पिता धर्मिक विद्वान हैं। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्या जी ने उपस्थित मेहमानों का धन्यवाद किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**